प्रभात खबर

लाइफ@पटना

पटना, शुक्रवार 1.04.2016

डॉक्यूमेंट्री

रूकनपुरा के वृद्धाश्रम में प्रांजल सिंह की नयी डॉक्यूमेंट्री का प्रदर्शन

बुजुर्गों की पीड़ा बयां करती 'जिंदगी एक लमहा'

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

'जिंदगी हर पल आगे बढ़ती जाती है. रंग बदल कर, हर बार नये रूप में ढल जाती है जिंदगी. लम्हों में सिमटी हुई है जिंदगी. लम्हों को जोड़ कर बनती है जिंदगी.' जिंदगी के बारे में यह बातें शहर के युवा डॉक्यूमेंट्री मेकर प्रांजल सिंह ने कही. गुरुवार को रूकनपुरा बेली रोड स्थित वृद्धाश्रम 'सहारा समाज कल्याण विभाग' में इन्होंने अपनी नयी डॉक्यूमेंट्री 'जिंदगी एक लम्हा' का प्रदर्शन किया. इस डॉक्यूमेंट्री का निर्माण पटना में हुआ है. इस डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से वह उन वरिष्ठ नागरिकों पर सब का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं और समाज को यह दिखाना चाहते हैं कि वृद्धाश्रम में रह रहे बुजुर्गों का जीवन कितना दर्द से भरा हुआ है और वे हर दिन कितनी परेशानियों का सामना करते हैं. बुजुर्ग अपने बच्चों से बहुत उम्मीद रखते हैं, लेकिन बच्चे उनको वृद्धाश्रम छोड़ आते हैं, जहां वे अपनी बाकी जिन्दगी इस आशा में बीता देते हैं कि शायद कल उनके बच्चे उनको लेने वापस आयें. फिल्म प्रदर्शन के दौरान उन्होंने अपनी कुछ अनमोल यादें शेयर की जो वह वृद्धाश्रम से समेट के लाये थे. उन्होंने बताया कि मैं हमेशा से सामाजिक मुद्दों पर फिल्म बनाता रहा हूं. यह फिल्म मेरे दिल को छू गयी है, इसलिए इसे लोगों को दिखाना चाहता हूं. एक बुजुर्ग ने इंटरव्यू के दौरान पूरी टीम को बताया कि पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव की वजह से अब परिवार छोटे होते जा रहे हैं और लोग अपने माता-पिता का साथ नहीं देते हैं. इस वजह से हर दिन नये वृद्धाश्रम बन रहे हैं.

ये हैं फिल्म के कास्ट

- कास्ट– साधना शिवानी
- निर्माता/निर्देशक– प्रांजल सिंह
- सहनिर्माता– मनोज चौहान
- एसोसिएट डायरेक्टर– सूर्या चौहान
- डीओपी– प्रांजल सिंह एवं अवनिश शर्मा
- एडिटर– प्रांजल सिंह
- प्रोडक्शन मैनेजर– साधना शिवानी
- स्क्रीनप्ले– ज्योति तिवारी
- संगीत एवं गायक – अभिनय और विशाल

डॉक्यूमेंट्री मेकर प्रांजल सिंह

भावनात्मक दौर से गुजर कर बनायी फिल्म

इस फिल्म के बारे में प्रांजल कहते हैं कि शूटिंग के दौरान मेरे साथ पूरी टीम को एक बहुत ही भावनात्मक दौर से गुजरना पड़ा. इस फिल्म के माध्यम से और एक इनसान होने की हैसियत से मैं सभी लोगों से यह पूछना चाहता हूं कि क्या जरूरी है आप सब के लिए- मां का प्यार और ममता या समाज का दिखावटी चेहरा. हम सब को जरूरत है आगे बढ़ने की और अपने आस-पास मौजूद बुजुर्गों को प्यार और इज्जत बांटने की. यहां राधा मोहन सिंह को न्यायालय में इच्छामृत्यु तक की गुहार लगानी पड़ी क्योंकि उनके बच्चों ने उन्हें छोड़ दिया. अब वह वृद्धाश्रम में रहने को मजबूर है. उन्होंने हमारी टीम को बताया कि जब एक वृक्ष बड़ा हो जाता है तो वह नयी पीढ़ी को छाया देता है पर आज कल लोगों को बुजुर्गों के तजुर्बे और ज्ञान की जरूरत नहीं. वे कहते हैं कि उन्हें प्यार और इज्जत के सिवा और कुछ नहीं चाहिए. वे अपने आखिरी दिन बच्चों के साथ बिताना चाहते हैं. इसके एवज में उन्हें बिना चीनी की चाय भी मीठी लगेगी. पूरे विश्व में वरिष्ठ नागरिकों की जनसंख्या करीब 60 करोड़ है और भारत में लगभग 10 करोड़ बुजुर्ग हैं.

डॉक्यूमेंट्री फिल्म का प्रदर्शन आज

पटना। फिल्मकार प्रांजल सिंह ने वृद्धाश्रम पर एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनायी है। इसकी शूटिंग पटना स्थित ओल्ड एज होम में की गयी है। इसके माध्यम से निर्देशक सिंह ने बुजुर्गों की स्थिति और समाज के असली चेहरे को सामने लाने की कोशिश की है। पहला प्रदर्शन बुधवार को वेदनगर रूकनपुरा स्थित एक ओल्ड एज होम में सुबह 11.30 बजे से होगा।

— Hindustan Hindi

Scanned with CamScanner

नवभारत टाइम्स
NBT

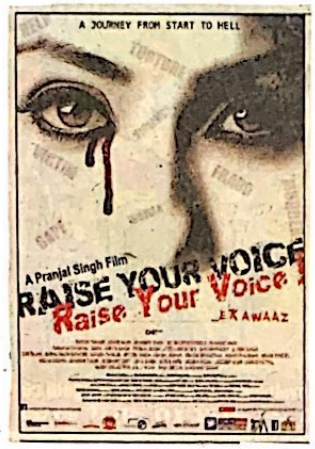

महिला उत्पीड़न के खिलाफ 'रेज योर वॉइस' रिलीज

प्रशांत श्रीवास्तव

महिला उत्पीड़न के खिलाफ लोगों को जागरूक करने के लिए लखनऊ के वन क्लिक प्रोडक्शन की शॉर्ट फिल्म रेज योर वॉइस रविवार को रिलीज की गई। कैसरबाग स्थित राय उमानाथ बलि प्रेक्षागृह में इस फिल्म की स्क्रीनिंग हुई। फ़िल्म की स्टोरी और डायरेक्शन प्रांजल सिंह का है। प्रांजल बताते हैं कि 20 मिनट की इस फिल्म में ईव टीजिंग, रेप, घरेलू हिंसा समेत महिला उत्पीड़न से जुड़ी तमाम समस्याओं को उठाया गया है। खास बात यह है कि फिल्म की शूटिंग लखनऊ में हुई है और इसमें काम करने वाले सभी एक्टर्स लखनऊ के हैं। उनके मुताबिक, 'इस फिल्म के जरिए हम इंसानियत को जगाने की कोशिश कर रहे हैं ताकि सब मिलकर महिलाओं के साथ होने वाले जुर्म के खिलाफ कदम उठाएं।'

Scanned with CamScanner

Documentary Film ZINDAGI EK LAMHA released

Directed and Produced by Pranjal Singh was released at his office One Click Production Vikas Khand Gomti Nagar Lucknow this is his 11th film .

The film is shot in lucknow and Patna city of Bihar. Through this documentary film the director Pranjal Singh wanted to show the real and harsh face of the society. He focused on senior citizens living in old age home and facing the adversities of life. Senior citizens expect a lot from their children but they often leave them in old age homes to count the last few days of life in hope of seeing their children again. Pranjal Singh during his interview shared some of his memories which he underwent during his shoot of the film. He told that during one of the interviews a senior citizen said that due to western culture and trending nuclear family system people are now not willing to take care of their parents and thus the old age homes are rising every day.

Director Pranjal Singh , said "while shooting it was very hard for me and my team to see this tough phase of life . The director also said that " By the medium of this documentary and I being a child would like to question everyone out there that what is more precious for you all... love and care of your mother or the fake face of society . take a step forward and spread unconditional love to the old people around you this is all they want. An old man Radha Mohan Singh who has also appealed the court for euthanasia (mercy killing) who lives in one of the old age homes told the team that "when a tree grows old it provides shelter to the young generation but people today do not need the valued knowledge of the elders. we elders do not need anything else except love and respect and we want to spend our left days with small kids this will be like sweet to our dinner plate. Internationally senior citizens population counts approx. 60 crore , India's counting is approx. 10 crores . In the end Pranjal concluded his speech with a request that we all should respect and care our parents as because of them we are here in this world and this is our very first duty to do so.

Scanned with CamScanner

जिन्दगी एक लम्हा आज डाक्यूमेंट्री फिल्म हुई रिलीज

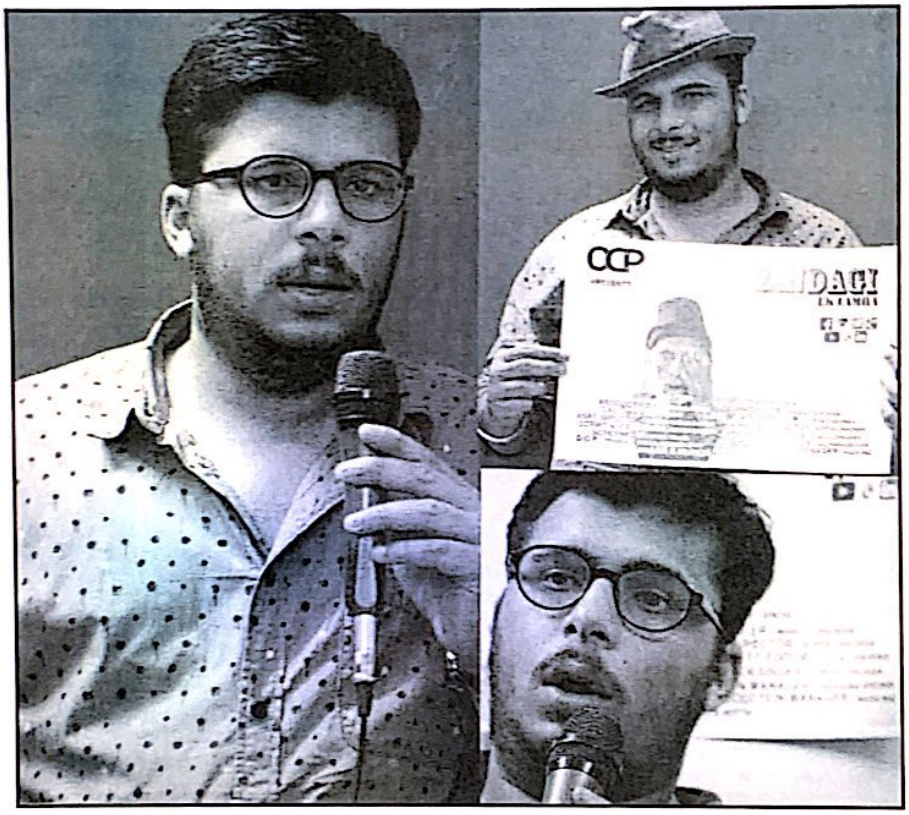

लखनऊ। निर्देशक प्रांजल सिंह द्वारा निर्मित डाक्यूमेंट्री फिल्म जिन्दगी एक लम्हा आज सोमवार को उनके कार्यालय वन क्लिक प्रोडक्शन में रिलीज हुई। निर्देशक ने बताया कि, यह उनकी 11 वीं डाक्यूमेंट्री फिल्म है। उन्होंने बताया कि, इस फिल्म का निर्माण बिहार की राजधानी पटना में हुआ है। इस फिल्म के माध्यम से समाज का असली और कठोर चेहरा उजागर किया गया है। उन्होंने बताया कि, फिल्म में उन वरिष्ठ नागरिकों पर सब का ध्यान आकर्षित किया गया है कि, वृद्धाश्रम में रह रहे बुजुर्गों का जीवन कितना दर्द भरा हुआ है। उनको जिंदगी में कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। कहानी कुछ इस तरह है कि, बुजुर्ग अपने बच्चों से बहुत उम्मीदें रखते हैं पर उनके बच्चे उनको वृद्धाश्रम छोड़ आते हैं। जहां वह अपनी जिंदगी के चंद बाकी लम्हें इस पल आशाओं में बिता देते हैं कि, सायद कल उनके बच्चे उनको जरुर लेने आयेंगे। लेकिन उनकी सारी उम्र अपने दर्द को दिलों में ही समेटकर गुजर जाती है। निर्देशक ने बताया कि, पश्चिमी सभ्यता की वजह से अब परिवार छोटे होते जा रहे हैं और लोग अपने माता पिता का साथ नहीं देते हैं जिस कारण हर दिन नये वृद्धाश्रम बन रहे हैं। उन्होंने कहा कि, यह उम्र की एक ऐसी पड़ाव है जहां उनको अपने बच्चों के प्रति प्यार और भी प्रगाढ़ हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

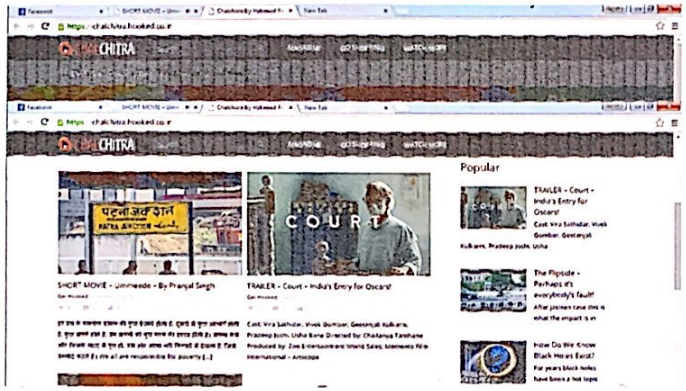

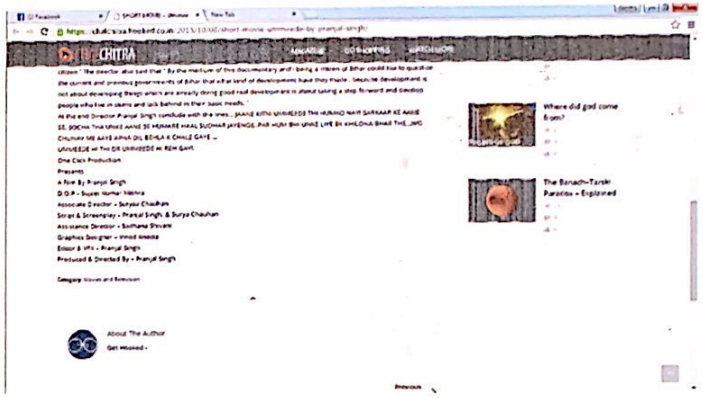

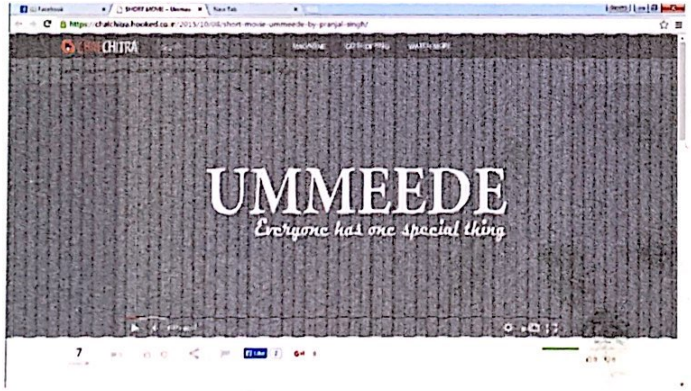

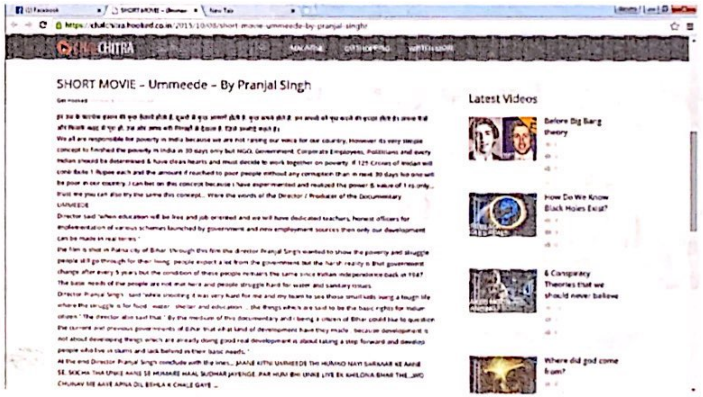

Scanned with CamScanner

Music album by Patna boy leaked

Nandini
htpatna@hindustantimes.com

PATNA: Patna boy Pranjal Singh, who created a music album 'Sajna Ve' is shocked to find that it has already been leaked on video hosting websites.

Singh, who has directed the album, claimed the censor copy of the album was leaked on Thursday.

However, intervention by the production team, which demanded that the videos be taken down due to copyright issues, caused the uploaders removing the said videos six hours later from YouTube, channels and website.

"We saw a censor copy of our music album, which is yet to be released officially, on a You Tube channel. However, they removed it after we confronted them, citing copyright issues," said Singh.

Meanwhile, Singh, who successfully ran a series of web episodes of a comedy show named 'The BC Show' on YouTube has got offers from two television channels to relay the show.

"Two noted television channels said they were ready to relay my show on their channels. I will select the one, which suits my show's profile and benefits me financially," he said.

Moreover, a comedy show titled 'Jugaadi Lal' made by Singh would soon be relayed on Doordarshan every weekend at 9 am for a year.

"It is likely to start from second week of August. We are waiting for sponsors," he added.

Singh is known for producing a documentary on Patna and a short film on an old age home in Patna titled 'Zindagi Ek Lamha', besides several short films in the city.

Scanned with CamScanner

'ओ सजना वे, पूरा हो जाए तेरा सपना...'

कानपुर। संगीत भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। संगीत का जन्मदाता है हमारा देश। हमारे देश की ही देन है जो संगीत इतना आगे बढ़ चुका है। यह सुनकर आपको हैरानी होगी कि भारत जैसे देश में जहां संगीत को ईश्वर के समान माना गया है। उसमें केवल रेलवे ही ऐसा विभाग है जहां संगीत प्रेमियों को आरक्षण दिया जाता है। वह भी महज 2 प्रतिशत। जबकि स्पोर्ट्स कोटा इससे कई अधिक है। इससे संगीत के प्रति सरकार की उदासीनता साफ नजर आ रही है। कानपुर शहर में ऐसे अनगित लोग हैं जो संगीत के क्षेत्र में बेहतर कर सकते हैं लेकिन सरकार का इस ओर रूझान न होने से उनकी यह प्रतिभा छुपी ही रह जाती है। एक ऐसे ही संगीत प्रेमी पंकज मनचंदा शास्त्री नगर के निवासी हैं। जो खुद की धुन व खुद का लिखा गीत 'सजना वे' 5 अगस्त को लांच करेंगे। उन्होंने बताया कि सजना वे वीडियो सॉग 4.41 सेकेण्ड में रिकॉर्ड

किया गया है। जिसकी शूटिंग लखनऊ के कैपेचीनों ब्लास में की गई है। अभी उन्होंने इस गाने की 30 सेकेण्ड की धुन ही रिलीज की है। जिसे लोगों ने काफी पसंद किया है। इस गाने में उनकी पार्टनर उनकी पत्नी शिल्पा मनचंदा हैं। पंकज ने बताया कि उन्हें शुरू से ही गाने लिखने का शौक है। सजना वे उनका पहला गीत है। जिसे बहुत ही कम बजट ढाई लाख में तैयार किया गया है। इस गाने की सफलता के बाद वह फ्यूचर प्लानिंग करेंगे।

Scanned with CamScanner

Zoom out (Ctrl+Minus)

HINDUSTAN TIMES, PATNA
TUESDAY, MAY 24, 2016

Patna boy docu to 'repair' Bihar image

Nandini
htpatna@hindustantimes.com

PATNA: If you are one among those who think 'Jungle Raj' prevails in Bihar owing to recent incidence of crime in the state, Patna boy documentary maker Pranjal Singh begs to differ.

"People struggle with a mindset about Bihar that is all wrong. A few murders and other crime incidents notwithstanding, Patna remains a city with rich culture and history which makes it unique", he says.

This uniqueness is the theme of Pranjal's documentary that he needed all of one and a half years to complete. It premiered recently in the studio 'One Click Production'.

The documentary portrays the city so well that anyone may just be tempted to visit Patna at least once in his or her life.

It draws on life along the river Ganga, along the southern bank of Patna is situated. It also portrays its diverse culture, the splendor of its festivals and the richness of its cuisine.

The documentary rests heavily on Patna's local history, its popular monuments and heritage spots like Agam Kuan, Jama Masjid and Takht Sri Harmandirji, Patna Sahib.

It also zeroes in on the city parks like Eco Park, hotels like Maurya Patna and Chanakya and the life in and around the Maurya Lok shopping complex, striving to prove wrong those who run down Patna as an underdeveloped city.

The documentary also delves into the architecture of Patna, and draws upon gripping scenes from its railway stations and airport. In fact, the film has covered everything the city has and shown it interestingly and with perspective.

Takht Sri Harmandirji, Patna Sahib

"Just because of a few incidents, one should not form an opinion about the whole state or city without knowing about its history and culture. The documentary attempts to contribute to Bihar's image building", says Pranjal.

He said the documentary project was started in 2014 and completed towards the end of 2015. "It took me over Rs 1 lakh to make the documentary," citing how expensive things were.

It was left to Pranjal to raise funds for the documentary, for, even though it purported to showcase Bihar, he did not get any support from Bihar government or its tourism department.

The documentary will be telecast on Doordarshan in the first week of June. It is available on YouTube where it has had over 5,000 views already and has garnered a lot of appreciation.

Apart from this one, Pranjal has made several documentaries on social issues such as poverty, patriotism, women's security and old age homes. His next project is a feature film based on hallucination, which will be released soon.

Scanned with CamScanner

पटना की खूबसूरती पर बनी डॉक्यूमेंटरी

पटना : शहर पटना को नये नजरिये से देखने के लिए युवा फिल्म निर्देशक प्रांजल सिंह ने डॉक्यूमेंटरी का निर्माण किया है। इस डॉक्यूमेंटरी में राजधानी का दिल कहे जाने वाले गांधी मैदान, गंगा घाट व गोलघर आदि को करीने से दिखाया गया है। इसके अलावा ऐतिहासिक महत्व रखने वाले इमारत को भी दिखाया गया है। डॉक्यूमेंटरी में पटना के अलग-अलग रंग दिखेंगे। शहर का खान-पान, सांस्कृतिक विरासत व पर्व-त्योहार के दौरान उमड़ने वाले उमंग के रंग को दिखाया गया। डॉक्यूमेंटरी फिल्म के निर्देशक प्रांजल सिंह बताया कि मंगलवार को वन क्लिक प्रोडक्शन के बैनर तले इस फिल्म का प्रीमियर किया गया। इस फिल्म के निर्माण में बिहार सरकार का योगदान रहा।

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार
दैनिक जागरण

Scanned with CamScanner

अवामी सालार عوامی سالار

Lucknow
Monday 16 March 2015

لکھنؤ: جے شنکر پرساد آڈیٹوریم میں عورتوں کے مسائل متعلق فلم 'ریز یور وائس' (اپنی آواز بلند کریں) کا عملہ پریس سے گفتگو کرتا ہوا (تصویر: سالار)

Scanned with CamScanner

उत्तर भारतीय पत्रिका

फिल्म रेज योर वौइस् एक आवाज रिलीज

लखनऊ। यूबीपी न्यूज़

निर्माता निर्देशक प्रांजल सिंह द्वारा निर्मित फिल्म रेज योर वौइस् एक आवाज की रिलीज रविवार को राय उमानाथ बलि प्रेक्षागृह में हुई है इस मौके पर फिल्म से जुड़े सारे लोग मौजूद थे। यह फिल्म महिला सरोकारों व आधी आबादी की आधुनिक समस्याओं जैसे बलात्कार, हिंसा , छेड़छाड़ पर बनी समाज को झकझोर देने वाली 20 मिनट की शॉर्ट फिल्म है। फिल्म निर्माता ने बताया कि हमारा मानना है की लड़की होना कोई गुनाह नहीं है और औरत को प्रताड़ित करना मर्दो की शान नहीं है। हमारे संविधान में भी दोनों को समान अधिकार दिए गए हैं फिर भी महिलाओं का सम्मान करना हम अक्सर भूल ही जाते हैं। यह फिल्म हमारा एक छोटा सा प्रयास है हमारे समाज में बलात्कार और शारीरिक उतपीड़न की उन खामोश कहानियो के दर्द को सामने लेन का , जो की समाज के डर के कारण कभी सामने नहीं आ पाती।

Scanned with CamScanner

the pioneer
LUCKNOW I TUESDAY I MARCH 15, 2016

Documentary film on senior citizens released

Lucknow (PNS): A documentary film, 'Zindagi Ek Lamha,' directed and produced by Pranjal Singh, was released at his office.

He said that the film was shot in Lucknow and at Patna in Bihar. "Through this documentary film I wanted to show the real and harsh face of the society. I have focused on senior citizens living in old-age homes and facing the adversities of life. Senior citizens expect a lot from their children but they often leave them in old-age homes to count the last few days of life in the hope of seeing their children again," he said. Pranjal Singh shared some of his memories which he underwent during the shoot of the film. He said that during one of the interviews a senior citizen said that due to western culture people were now reluctant to take care of their parents and thus the number of old-age homes was increasing. He said that while shooting it was very hard for me and my team to see this tough phase of life. " Through the medium of this documentary, I would like to question everyone out there that what is more precious for you all... love and care of your mother or the fake face of the society. Take a step forward and spread unconditional love to the old people around you, this is all they want." An old man, who has also appealed the court for euthanasia (mercy killing), who lives in one of the old-age homes, told the team that "when a tree grows old, it provides shelter to the young generation but people today do not need the valued knowledge of elders. We elders do not need anything else except love and respect and we want to spend our last days with small kids," he said.

हिन्दुस्तान लखनऊ •मंगलवार •15 मार्च 2016

धड़कन

लघु फिल्म जिन्दगी एक लम्हा तैयार

लखनऊ। वृद्धा आश्रम में जिन्दगी गुजार रहे बुजुर्गों को तमाम परेशानियों से गुजरना पड़ता है। उनका जीवन दर्द से भरा हुआ है। प्रांजल सिंह ने समाज के इसी कठोर चेहरे पर आधारित डाक्यूमेंट्री फिल्म 'जिन्दगी एक लम्हा' का निमार्ण किया है। वन क्लिक प्रोडेक्शन बैनर के तहत बनी फिल्म सोमवार को रिलीज की गई। प्रांजल सिंह ने फिल्म का निर्देशन किया है। प्रांजल ने बताया कि हमें अपने बुजुर्गों के प्रति संवेदनहीन नहीं बल्कि संवेदनशील होना पड़ेगा क्योंकि कल हम भी बूढ़े होंगे।

Scanned with CamScanner

स्वतंत्र भारत

लखनऊ मंगलवार, 15 मार्च 2016 ( )

डाक्यूमेण्ट्री फिल्म 'जिन्दगी एक लम्हा आज' रिलीज

लखनऊ (सं)। निर्माता-निर्देशक प्रांजल सिंह द्वारा निर्मित डाक्यूमेण्टी फिल्म 'जिन्दगी एक लम्हा आज' वन क्लिक प्रोडक्शन आज मे रिलीज हुई। प्रांजल सिंह के मुताबिक यूं तो हर पल बढ़ती है जिन्दगी रंग बदलती नये रूप मे ढलती है जिंदगी लम्हे मे सिमटी लम्हो से बंधती लम्हों मे कटती लम्हों को जोड़कर बनती है जिन्दगी। इस फिल्म का निर्माण लखनऊ एवं बिहार की राजधानी पटना में हुआ है। इस फिल्म के माध्यम से निर्देशक प्रांजल सिंह ने समाज का असली और कठोर चेहरा दिखाने की कोशिश की है इस फिल्म के माध्यम से वह उन वरिष्ठ नागरिकों पर सब का ध्यान आर्कषित करना चाहते हैं और समाज को यह दिखाना चाहता है कि वृद्धाश्रम में रह रहे बुजुर्गों का जीवन कितने दर्द से भरा है और वो हर दिन कितनी परेशानियों का सामना करते हैं। बुजुर्ग अपने बच्चों से बहुत उम्मीद रखते हैं पर उनके बच्चें उनको वृद्धाश्रम छोड़ आते हैं जहां वे लोग अपनी जिन्दगी के चंद बाकी पल इस आशा मे बिता देते हैं कि शायद कल उनके बच्चे उनको लेने वापस आये।

श्री सिंह ने सबसे अपनी कुछ अनमोल यादें बांटी जो वह वृद्धाश्रम से समेट के लाये थे।

उन्होंने बताया एक बुजुर्ग के इंटरव्यू के दौरान उन्होंने प्रांजल और उनकी टीम को बताया कि पश्चिमी सभ्यता की वजह से अब परिवार छोटे होते जा रहे हैं और लोग अपने माता पिता को साथ नही देते हैं जिस वजह से हर दिन नये वृद्धाश्रम बन रहें है।

निर्माता प्रांजल सिंह ने बताया कि शूटिंग के दौरान उनको और उनकी टीम को एक बहुत ही भावनात्मक दौर से गुजरना पड़ा उन्होंने यह भी बताया कि इस फिल्म के माध्यम से और एक इंसान होने की हैसियत से मैं आप सब से यह पूछना चाहता हूं क्या जरूरी है आप सब के लिए मां का प्यार और ममता या समाज का दिखावटी चेहरा। उन्होंने कहा हम सब को जरूरत है आगे बढ़ने की और अपने आस -पास मौजूद बुजुर्गों को प्यार और इज्जत बांटने की।

राधा मोहन सिंह को न्यायालय में इच्छा मृत्यु तक की गुहार न्यायालय में लगानी पड़ी क्योंकि उनको उनके बच्चों ने छोड़ दिया।

आज यह वृद्धा आश्रम में रहने को मजबूर हैं, उन्होने हमारी टीम को बताया की जब एक वृक्ष बड़ा हो जाता है तो वह नयी पीढी को साया देता है पर आज कल लोगो को बुजुर्गों के तजुर्बे और ज्ञान की जरूरत नहीं।

वो कहते हैं कि उन्हे प्यार और इज्जत के सिवा उन्हे और कुछ नहीं चाहिए, वो अपने आखिरी दिन अपने बच्चों के साथ बिताना चाहते हैं इसके अवज में उन्हें बिना चीनी की चाय भी मिठ्ठी लगेगी।

Scanned with CamScanner

द मिड डे एक्टिविस्ट

PAGE 5

लखनऊ, मंगलवार, 17 मार्च 2015

फिल्म 'रेज योर वॉइस... एक आवाज' रिलीज

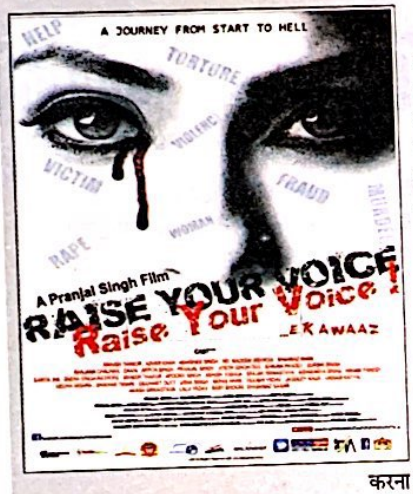

फिल्म के निर्माता निर्देशक प्रांजल सिंह मानना है कि यह फिल्म हमारा एक छेटा सा प्रयास है हमारे समाज में बलात्कार और शारीरिक उतपीड़न की उन खामोश कहानियों के दर्द को सामने लाने का है, जो कि समाज के डर के कारण कभी सामने नहीं आ पाती। उन्होंने कहा कि समय है अपनी आवाज उठने की, समाज को जागृत करने का। लड़की होना कोई गुनाह नहीं है और औरत को प्रताड़ित करना मर्दों की शान नहीं है। हमारे संविधान में भी दोनों को समान अधिकार दिए गए हैं फिर भी महिलाओं का सम्मान करना हम अक्सर भूल ही जाते हैं।

निर्माता निर्देशक प्रांजल सिंह द्वारा निर्मित फिल्म रेज योर वॉइस... एक आवाज की रिलीज 15 मार्च को राय उमानाथ बलि प्रेक्षागृह में हुई। इस मौके पर फिल्म से जुड़े सभी लोग मौजूद थे। यह फिल्म आधी आबादी की आधुनिक समस्याओं जैसे बलात्कार, हिंसा, छेड़छाड़ पर बनी समाज को झकझोर देने वाली 20 मिनट की शॉर्ट फिल्म है।

Scanned with CamScanner

पॉपुलैरिटी मिल रही है।

शॉर्ट फिल्म से किया मोटिवेट

गोमती नगर के प्रांजल सिंह ने शॉर्ट फिल्म के जरिए तिरंगे का महत्व बताने का प्रयास किया है। इसमें दिखाया गया है कि किस तरह 26 जनवरी को लोग महज एक छुट्टी और मस्ती का दिन समझते हैं। लोग घूमने निकलते हैं लेकिन सड़क पर पड़े तिरंगों की अनदेखी करते हैं। ऐसे में एक निशक्त लड़का वील चेयर पर होने के बावजूद उसे उठाकर नमन करता है। इसके प्रोड्यूसर सूर्या ने बताया कि हमारा मकसद लोगों को तिरंगे का महत्व समझाना है।

Scanned with CamScanner

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अख़बार
दैनिक भास्कर
बिहार
DainikBhaskar.com · पटना, शुक्रवार 15 नवंबर, 2019 · मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष 3, 2076 · 12 राज्य | 65 संस्करण

विशेष | इसके पहले बतौर असिस्टेंट डायरेक्टर बुलेट राजा, डेढ़ इश्किया, इश्कजादे ,रईस, पीके, संजू, बायपास रोड में कर चुके हैं काम

पटना के प्रांजल के हलाला को मिले कई इंटरनेशनल अवॉर्ड

श्रेया शर्मा. पटना

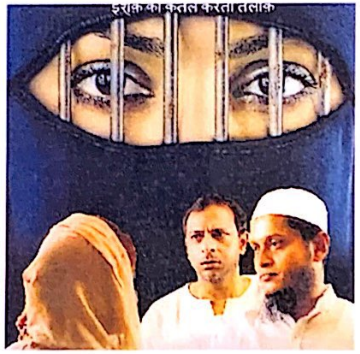

पटना के यंग डायरेक्टर प्रांजल सिंह की हाल ही में रिलीज फिल्म हलाला ए कर्स 14 सीरीज में जल्द ही नेटफ्लिक्स पर रिलीज होने वाली है। मुस्लिम समाज की हलाला प्रथा पर आधारित इस फिल्म को कई इंटरनेशनल अवॉर्ड मिल चुके हैं। साथ ही कई नेशनल और इंटरनेशनल अवार्ड के लिए ये नॉमिनेटेड है। फिल्म के डायरेक्टर और लेखक पटना के प्रांजल हैं और प्रोड्यूसर नमिता चौबे हैं। इस सफल फिल्म के लिए प्रांजल ने अपनी पूरी टीम और गुरु राजीव रंजन चौबे को श्रेय दिया। उन्होंने बताया कि हमारी ये फिल्म महिलाओं की समस्याओं, उनके सशक्तीकरण और सुरक्षा पर सवाल खड़ा करती है। इसको बनाने से पहले प्रांजल ने हलाला प्रथा पर कई साल तक रिसर्च किया। 2015 से ही रिसर्च शुरू किया। फिल्म इस साल दिवाली पर रिलीज हुई है और काफी सुर्खियां बटोर रही है। इस फिल्म में डायरेक्टर ने इश्क और मजहब पर सवाल किया है। क्या इश्क की ताकत बड़ी है या फिर मजहब की। इसमें एक्टिंग पटना की एक्ट्रेस समिधा और बॉलीवुड एक्टर जॉय सेनगुप्ता ने किया है। फिल्म की स्क्रिप्ट मोहम्मद अतीक ने लिखी है। प्रांजल सिंह अभी अपकमिंग फिल्म दबंग थ्री और कई फिल्मों पर काम कर रहे हैं। इससे पहले बतौर असिस्टेंट डायरेक्टर उन्होंने बुलेट राजा, डेढ़ इश्किया, इश्कजादे, रईस, पीके, संजय, बायपास रोड में भी काम कर चुके हैं।

उनकी हर फिल्म में होते हैं सामाजिक संदेश, मानते हैं इसे नॉलेज का जरिया

प्रांजल सिंह का मानना है कि सिनेमा केवल एंटरटेनमेंट के लिए नहीं है ये नॉलेज और आर्ट का भी जरिया है। उन्होंने अपना खुद का प्रोडक्शन हाउस वन क्लिक शुरू किया। बचपन से ही कैमरे और फोटोग्राफी में इंट्रेस्टेड प्रांजल को पता था उन्हें क्या करना है। पटना के अलावे 7 अन्य शहरों में उनका प्रोडक्शन हाउस चलता है जिसमें 508 लोग काम करते हैं। इसके पहले भी अपने प्रोडक्शन हाउस में उन्होंने सोशल मुद्दों पर कई फिल्में बनाई हैं जो बहुत पसंद की गई हैं। महिला सशक्तीकरण पर रेज योर वाइब्स, बिहार के आर्ट और कल्चर पर पटना डॉक्यूमेंट्री, देश के नेताओं पर उम्मीदें और ओल्ड एज होम पर जिंदगी एक लम्हा जिंदगी उन्होंने बनाई हैं। प्रांजल कहते हैं कि

नेटफ्लिक्स पर दिसंबर में होगी रिलीज

प्रांजल की ये फिल्म हलाला-ए कर्स दिसंबर महीने में नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी। 14 सेट की सीरीज में रिलीज होने के लिए फिल्म तैयार है। इस फिल्म को न्यूयॉर्क फिल्म फेस्टिवल, जापान फिल्म फेस्टिवल, कनाडा फिल्म फेस्टिवल में अवार्ड मिल चुका है। साथ ही यह यूके फिल्म फेस्टिवल, कान्स फिल्म फेस्टिवल, सऊदी अरब फिल्म फेस्टिवल में नॉमिनेटेड है।

Scanned with CamScanner

पटना
जागरण सिटी
दैनिक जागरण
पटना, 7 नवंबर 2017
www.jagran.com

गलतियां हमेशा क्षमा की जा सकती है, यदि आपके पास उन्हें स्वीकारने का साहस हो।
- महात्मा गांधी

कॉलेज से सिनेमा के लिए धड़कता था दिल

पेशे से फिल्म डायरेक्टर प्रांजल सिंह को घर वालों ने इस मकसद से एमबीए करवाया कि कॉरपोरेट कंपनी में आसानी से नौकरी मिल जाएगी। लाखों का पैकेज होगा। कॉलेज में जब उनके साथी कैंटीन में समोसे उड़ाते थे, उस समय वे कैमरे से कोई फोटो या वीडियो शूट करने निकल जाते थे। घर वाले समझाते रहे इससे क्या होगा। देखते ही देखते ही वे शॉर्ट फिल्म बनाने लगे। सरकारी प्राजेक्ट के लिए भी फिल्में बनाने लगे। धीरे-धीरे नाम भी रहा था और आमदनी का जरिया बढ़ने लगा। बेली रोड के प्रांजल सिंह बताते हैं, कॉलेज के दिनों से ही डिस्कवरी व नेशनल जियोग्राफिक जैसे चैनल के साथ काम करने का मौका मिला।

पहले शॉट फिल्में बनाकर पहचान बनाई। अब क्षेत्रीय व कॉमर्शियल फिल्मों के निर्माण में भी व्यस्त हैं। दिल्ली, कोलकाता व मुंबई जैसे शहरों में अपना प्रोडक्शन हाउस है। अब पहचान मिलने लगी है। आज हमारे साथ सैंकड़ों युवा देश के अलग-अलग हिस्सों में जुड़े हैं। शॉट फिल्में बनाने से पहले इश्कजादे व बुलेट राजा जैसी फिल्मों में सहायक निर्देशक के रूप में काम किया।

हूं। लोक
हूं। हालां
संगीत में
है लोक
चाहिए,

नौक
सेट

था। घर
विश्वास
के दौरा
बिजनेस
थी। कॉ
होते ही

Scanned with CamScanner

'हलाला' फिल्म की रिलीज की तैयारी में हैं प्रांजल

कभी बुजुर्गों की कहानी, तो कभी महिलाओं की जिंदगी पर आधारित कहानियों को परदे पर उतारने के लिए पटना के प्रांजल हमेशा से आगे रहे हैं. उन्होंने अब तक कई फिल्मों के जरिये सामाजिक मुद्दों को उठाया है, जो लोगों को जागरूक कर सके. पटना से मुंबई जाने का सफर भी उन्होंने इसलिए तय किया, ताकि फिल्मों में कम कर सकूं. वे हमेशा प्रोडक्शन या डायरेक्शन में काम कर रहे हैं. इस बार वे गंभीर मुद्दे पर आधारित फिल्म हलाला पर काम कर रहे हैं. बताया कि हमारी आने वाली फिल्म हलाला है, जो ईआइपीएल प्रोडक्शन के बैनर तले बन रही है.

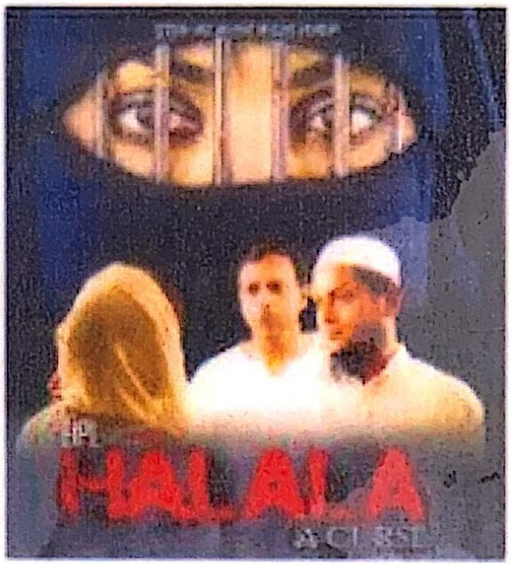

गंभीर मुद्दा है 'हलाला' : हलाला मुस्लिम कम्युनिटी का एक गंभीर मुद्दा है, जिस पर फिल्म बनाने लिए इस विषय की पूरी जानकारी लेना अनिवार्य है. इस बारे में प्रांजल कहते हैं कि यह फिल्म अन्य फिल्मों से अलग है. इसके लिए कई परेशानियों का सामना करना पड़ा है. हलाला (इश्क का कत्ल करता तलाक) काम शुरू करने से पहले इस बारे में सही से जाना कि आखिर हलाला का मतलब क्या होता है. फिल्म का काम लगभग खत्म हो चुका है. रिलीज की तारीख अभी तय नहीं हुई है. फिल्म मुख्य रूप से जॉय सेन गुप्ता, समिंदा किरण, महबूब किरण काम कर रही हैं. इसके डायरेक्टर प्रांजल खुद है. वे कहते हैं कि फिल्म को बेहतर तरीके से बनाने का प्रयास किया जा रहा है. फिल्म पूरी तरह से स्क्रिप्टेड है. इसका किसी भी रियल जिंदगी से कोई संबंध नहीं है. आज भी समाज में कई लोग हलाला का मतलब नहीं समझते हैं, जो फिल्म में दिखाया जायेगा.

प्रभात खबर
Thu, 05 July 2018
epaper.prabhatkhabar.com/c/30183998

Scanned with CamScanner

इवेंट्स

prabhatkhabar.com

लाइफ @ पटना

पटना,
1.02.20

ों में बढ़ रहा यू-ट्यूब चैनल खोलने का क्रेज

ट्यूब चैनल्स पटनाइट्स पसंद बने, हो रही आय

2010 से किया था चैनल की शुरुआत

बेली रोड के प्रांजल ने कहा है, मेरे वीडियोज को दो लाख तक सब्सक्राइबर मिले. फिलहाल वन क्लिक प्रोडक्शन एक नया चैनल है जिसमें बहुत कम समय में 10 हजार से ज्यादा करीब सब्सक्राइबर मिले हैं. इसमें नये म्यूजिक एलबम और वीडियो शेयर किये जाते हैं. इसे लोग काफी पसंद कर रहे हैं.

OCP
ONE CLICK PRODUCTION

प्रभात खबर
लाइफ @ पटना

दूल्हा-दुल्हन फोटोशूट करा भेज रहे

हार्ट टचिंग इनविटेशन

एक ऐसा वीडियो जो जिंदगी भर याद रहे

हमारी जिंदगी की सबसे यादगार दिन 9 फरवरी है, जिस दिन हम शादी के पवित्र बंधन मे बंधने वाले है. यह कहना है बेली रोड के प्रांजल का, जिनकी शादी डॉ निशा से तय हुई है. उन्होने बताया कि हम अपने बीजी शेड्यूल से शादी की तैयारी के लिए टाइम निकाल रहे है. ऐसे मे बुकिंग के बाद सबसे पहले हमने प्री वेडिंग फोटो शूट के साथ-साथ हमने सेव द डेट का एक प्यारा का वीडियो डिजाइन करवाया है, जिसे वन क्लिक प्रोडक्शन द्वारा शूट किया गया है. इसकी शूटिंग हमने गुरु ग्राम स्टूडियो मुंबई मे 23 दिसंबर को करायी थी. शादी नजदीक आते ही हमने अपनी वीडियो को शेयर करना शुरू कर दिया है. अब हमारे शादी की कार्ड से ज्यादा लोग अपनी वीडियो को पसंद कर रहे है. यह सब एक यादगार पल है, जो पूरी जिंदगी हमे याद रहेगी. लोग हमारे शादी की डेट कई दिनो पहले ही सेव कर चुके है.

Scanned with CamScanner

www.patrakarsatta.com
हिन्दी दैनिक
पत्रकार सत्ता
लखनऊ. सोमवार .16 मार्च. 2015
राजधानी सत्ता

लखनऊ जय शंकर प्रसाद सभागार में फिल्म रेज योर वाइस के निर्माता फिल्म की जानकारी देते हुए। छायाकार : पत्रकार सत्ता

फिल्म रेज योर वॉयस रिलीज

लखनऊ। (पत्रकार सत्ता)। निर्माता निर्देशक प्रांजल सिंह द्वारा निर्मित फिल्म रेज योर वॉयस एक आवाज की रिलीज रविवार को राय उमानाथ बलि प्रेक्षागृह में हुई है इस मौके पर फिल्म से जुड़े सारे लोग मौजूद थे। यह फिल्म महिला सरोकारों व आधी आबादी की आधुनिक समस्याओं जैसे बलात्कार, हिंसा , छेड़छाड़ पर बनी समाज को झकझोर देने वाली 20 मिनट की शॉर्ट फिल्म है। फिल्म निर्माता ने बताया कि हमारा मानना है की लड़की होना कोई गुनाह नहीं है और औरत को प्रताड़ित करना मर्दो की शान नहीं है। हमारे संविधान में भी दोनों को समान अधिकार दिए गए हैं फिर भी महिलाओं का सम्मान करना हम अक्सर भूल ही जाते हैं। यह फिल्म हमारा एक छोटा सा प्रयास है हमारे समाज में बलात्कार और शारीरिक उत्पीड़न की उन खामोश कहानियों के दर्द को सामने लेन का , जो की समाज के डर के कारण कभी सामने नहीं आ पाती। समय है अपनी आवाज़ उठाने का , समाज को जागृत करने का काम करेगी ।

Scanned with CamScanner

the pioneer
LUCKNOW I MONDAY I MARCH 16, 2015

RELEASED

Producer and director Pranjal Singh released his short film "Raise your voice --- Ek awaaz" at Rai Uma Nath Bali auditorium. The whole cast and crew of the movie was present and interacted with people on the occasion.

लखनऊ, 16 मार्च 2015 दैनिक जागरण

महिला प्रधान फिल्म में कम दिखी उपस्थिति

जासं, लखनऊ : आधी आबादी के हक और समस्याओं को पर्दे पर लाकर सबके अंतर्मन को झकझोर देने वाली फिल्म का दावा हकीकत में कम दिखा। यह मौका था रविवार को राय उमानाथ बलि प्रेक्षागृह में फिल्म रेज योर वॉइस...एक आवाज की रिलीज का। जहां फिल्म से जुड़े तथ्यों पर बातचीत की गयी। साथ ही दृश्य भी दिखाए गए। यह दीगर है कि फिल्म में दिखाया गया गीत कैसी है यह जिंदगी, जिल्लत भरी जिंदगी..., जिसे महिलाओं के जीवन पर केंद्रित किया गया है, इसे गाया भी पुरुष ने ही है और फिल्मांकन भी पुरुष पर ही है। यह बात थोड़ा जरूर खटकी। बहरहाल फिल्म में महिलाओं के साथ होने वाली छेड़छाड़ की घटनाओं से लेकर आधुनिक समस्याओं पर बात की गई है। ओने क्लिक प्रोडेक्शन की इस फिल्म की अवधि बीस मिनट है। इसके निर्माता निर्देशक प्रांजल सिंह हैं।

Scanned with CamScanner

The Telegraph

Patna City maker Pranjal Singh at the time of shooting the documentary and (above) residents watch the film.
Pictures by Nagendra Kumar Singh

PATNA ROUND-UP

Documentary on heritage & food

A documentary film was premiered at One Click Production's city office on Tuesday.

Directed by Pranjal Singh, *Patna City*, depicts the essence of the city's diversity in culture and food. Addressing the audience, Singh recalled a few incidents from the shoot. He said his team got to know several stories on the city's heritage.

"You can feel the importance attached to river Ganga while watching the film," he said. "Chhath Puja has been depicted with all its rituals as it's the state's main festival."

Several landmarks of Patna, including Mahavir Mandir, Jama Masjid, Agamkan, Patna Sahib, Saat Murti, Biscomaun Bhavan, Gandhi Maidan and Golghar, have been shown in the film. Pranjal said he wanted to change people's perception and make a positive image of the city in their mind.

FARYAL RUMI

Scanned with CamScanner

Short film on women's trauma today

Reena Sopam
▪ htpatna@hindustantimes.com

▪ A still from the film 'Raise Your Voice'. FILE PHOTO

THE 30-MINUTE SHORT FILM PRODUCED BY ONE CLIQUE PRODUCTIONS, TALKS ABOUT STATUS OF WOMEN IN MODERN SOCIETY AND THE KIND OF MENTAL TORTURE AND PHYSICAL ABUSE THEY GO THROUGH IN AND OUTSIDE THE FOUR WALLS OF HOMES

PATNA: While everybody is busy celebrating woman power at Puja, a small band of young men and women have come up with their own film, "Raise your Voice", which will be launched here on October 9.

The 30-minute short film produced by One Clique Productions, talks about status of women in modern society and the kind of mental torture and physical abuse they go through in and outside the four walls of homes.

From domestic violence to sexual harassment at workplaces and eve teasing to molestations in public places and public transport, the documentary hopes to raise a voice and sensituse people.

Pranjal Singh who has scripted the story, said the short film conveyed the message that women needed to talk about these incidents.

"Most of the victims of such incidents try to hide it even from their parents. Sometimes, family members turn out to be worst counsellors, asking victims to shut up and forget the incident , despite the trauma. Maximum incidents remain unreported. In the movie we have tried to convey the message that women need to speak up and expose such crimes", said Singh.

Most of the incidents depicted in the movie are based on real life incidents. "In fact, our team had invited people to share their experiences on social media. While some wanted to maintain anonymity, others even disclosed their names," he said.

And the experiences that they shared were equally varied and shocking. A girl talked about the physical abuse she had to go through at the hands of her home tutor, while family members were away, another talked about her neighbour and a family friend, who committed such acts. Yet another talked about molestation at her workplace.

"All these incidents have been depicted in the film. But there is no dialogue and every incident has been suggested through symbols", he added.

The production team includes Bhavna Pandey, Sneha Singh Rathore, Jitesh Singh, Azhar Khan, Shahbaz Khan, Abishek Singh, Suryaa Chauhan and Surya Saxena.

Scanned with CamScanner

राष्ट्रीय सहारा
लखनऊ। सोमवार • 16 मार्च • 2015

लघु फिल्म है 'राइज योर वायस : एक आवाज

लखनऊ (एसएनबी)। महिलाओं के प्रति हो रहे अत्याचार पर अंकुश लगाने के लिए समाज के सभी लोगों को एकजुट होना चाहिये। 'यह बात 'राइज योर वायस--एक आवाज' के निर्माता व निर्देशक प्रांजल सिंह ने रविवार को राय उमानाथ प्रेक्षागृह में शार्ट फिल्म के रिलीज के मौके पर कही। इस अवसर पर फिल्म के सभी कलाकार व फिल्म से जुड़े अन्य लोग मौजूद थे। श्री सिंह ने कहा यह फिल्म समाज में महिलाओं के खिलाफ हो रहे शोषण, दुराचार, हिंसा व छेड़छाड़ पर आधारित है। बीस मिनट की फिल्म समाज को जागरूक करने के उद्देश्य से बनायी गयी है। फिल्म में उन महिलाओं का दर्द दर्शाया गया है जो कि समाज के डर से अपने ऊपर हुए अत्याचार को सामने नहीं ला पाती हैं। उन्होंने कहा कि लड़की होना कोई गुनाह नहीं है। औरत को प्रताड़ित करना मर्दो के लिए शान नहीं हो सकता है। संविधान में महिला व पुरुष दोनों को समान दर्जा दिया गया है। इसके बावजूद समाज में महिलाओं को कम अधिकार मिल रहा है। लोग महिलाओं का कम सम्मान कर रहे हैं।

Scanned with CamScanner

वॉयस ऑफ लखनऊ
राष्ट्रीय दैनिक
वर्ष-10/अंक-74 ■ लखनऊ ■ मंगलवार 17 मार्च, 2015 ■ महानगर

शॉर्ट फिल्म 'रेज योर वॉइस' का राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में हुआ प्रदर्शन

कार्यालय संवाददाता

लखनऊ। निर्माता निर्देशक प्रांजल सिंह द्वारा निर्मित फिल्म रेज योर वॉइस 3 एक आवाज़ की रिलीज सुबह 11.30 बजे राय उमानाथ बलि प्रेक्षागृह में हुई है इस मौके पर फिल्म से जुड़े सारे लोग मौजूद थे। यह फिल्म महिला सरोकारों व आधी आबादी की आधुनिक समस्याओं जैसे बलात्कार हिंसा छेड़छाड़ पर बनी समाज को झकझोर देने वाली 20 मिनट की शॉर्ट फिल्म है। हमारा मानना है की लड़की होना कोई गुनाह नहीं है और औरत को प्रताड़ित करना मर्दो की शान नहीं है। हमारे संविधान में भी दोनों को समाने अधिकार दिए गए हैं फिर भी महिलाओं का सम्मान करना हम अक्सर भूल ही जाते हैं। यह फिल्म हमारा एक छोटा सा प्रयास है हमारे समाज में बलात्कार और शारीरिक उतपीड़न की उन खामोश कहानियो के दर्द को सामने लेन का जो की समाज के डर के कारण कभी सामने नहीं आ पाती। समय है अपनी आवाज़ उठाने का ए समाज को जागृत करने का। रेज योर वौइस एक आवाज के निर्माता और निर्देशक प्रांजल सिंह एग्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर सूर्या चौहान, सह निर्माता बलराम अवस्थी, प्रोडक्शन हेड सूर्या चौहान स्क्रिप्ट और स्क्रीनप्ले सूर्य सक्सेना, कैमरा निर्देशक सूर्य सक्सेना, एडिटर अखिलेश मित्र, सब एडिटर अहमद हुसैन ,असिस्टेंट एडिटर नासिर, कॉस्ट्यूम डिज़ाइनर अदिति जैन, फोटोग्राफर अपर्णा सिंह, संगीत निर्देशक सोम्यशील मालवीया का है। फिल्म में अभिनय सरिता झा, मनीष ठाकुर, भावना पाण्डेय, स्नेहा सिंह जितेश सिंह अज़हर खान शाहबाज़ खान अभिषेक सिंह सुरभि सिंह रंजना चौहान मोहम्मद नदीम सिद्दीकी दानी प्रांजल सिंह मनीष ठाकुर अपूर्व सिंह सृजक श्रीवास्तव ऐश्वर्या सिन्हा उषा सिंह हिमानी पाण्डेय विदूषी यादव जगदीप कौर विक्रम कत्याल आकाश श्रीवास्तव अर्पित सिंह आशीष जोशुआ भूरि संगीतकार आशीष जोशुआ किया है।

Scanned with CamScanner

जन माध्यम लखनऊ, सोमवार, 16 मार्च, 2015

फिल्म रेज योर वॉइस एक आवाज रिलीज

लखनऊ। निर्माता निर्देशक प्रांजल सिंह द्वारा निर्मित फिल्म रेज योर वौइस् एक आवाज की रिलीज रविवार को राय उमानाथ बलि प्रेक्षागृह में हुई है इस मौके पर फिल्म से जुड़े सारे लोग मौजूद थे। यह फिल्म महिला सरोकारों व आधी आबादी की आधुनिक समस्याओं जैसे बलात्कार, हिंसा, छेड़छाड़ पर बनी समाज को झकझोर देने वाली 20 मिनट की शॉर्ट फिल्म है। निर्माता ने बताया कि हमारा मानना है की लड़की होना कोई गुनाह नहीं है और औरत को प्रताड़ित करना मर्दो की शान नहीं है। हमारे संविधान में भी दोनों को समान अधिकार दिए गए हैं फिर भी महिलाओं का सम्मान करना हम अक्सर भूल ही जाते हैं। समाज को जागृत करने का काम करेगी ।

Scanned with CamScanner

बागबानों की कहानी 'जिंदगी एक लम्हा'

एक दौर था, जब उनके इशारे पर पूरा शहर, जिला व विभाग दौड़ता था। कोई जिलाधिकारी तो कोई प्रबंधक के रूप में शान से अपनी जिंदगी जी रहे थे लेकिन आज अपमान की जिंदगी जीने को विवश हैं। रिटायरमेंट के बाद बच्चों ने अपने पिता को घर में रहने लायक तक नहीं समझा। बुजुर्गों की ऐसी समस्याओं को युवा फिल्म निर्देशक प्रांजल सिंह ने अपनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'जिंदगी : एक लम्हा' में दिखाने की कोशिश की है।

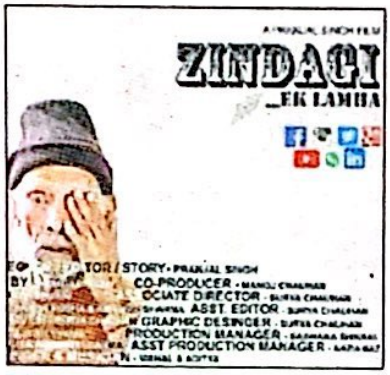

- रिटायरमेंट के बाद बच्चों के बुरे बर्ताव को फिल्म में दिखाया

बच्चों ने निकाला तो मांगी इच्छामृत्यु

कई हिन्दी फिल्मों में सहायक निर्देशक रह चुके प्रांजल बताते हैं कि यह फिल्म मानव संवेदना को गहराई से छूती है। फिल्म में राधा मोहन सिंह को बच्चे घर से निकाल देते हैं। बच्चों के व्यवहार से व्यथित होकर वे न्यायालय से इच्छामृत्यु की गुहार लगाते हैं। वे कहते हैं कि इस फिल्म में हमने दिखाया है एक जमाने में वही बुजुर्ग कभी आइएएस तो कभी अधिकारी के रूप में इज्जत की जिंदगी जी रहे थे लेकिन आज बच्चों ने उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ दिया है। निर्देशक प्रांजल का कहना है कि बुजुर्गों की इस समस्या पर कोई राजनीतिक दल बात नहीं करना चाहता।

सभी कलाकार पटना के

उन्होंने बताया कि इस फिल्म का निर्माण वन क्लिक बैनर तले किया गया है। इस फिल्म में काम करने वाले सभी कलाकार पटना के हैं। फिल्म की शूटिंग पटना व लखनऊ के लोकेशन पर हुई है। फिल्म लगभग डेढ़ घंटे की है। बेली रोड विजय नगर के निवासी प्रांजल बताते हैं कि उन्होंने फिल्म 'बुलेट राजा' व 'तनु वेड्स मनु' में बतौर फ्रीलांसर काम किया है। इसके अलावा वे कई डॉक्यूमेंट्री व शॉर्ट फिल्म का निर्देशन कर चुके हैं।

Scanned with CamScanner

आज
पटना
शुक्रवार, १ अप्रैल, २०१६

वृद्धाश्रम में बुजुर्गों का हाल बयां करता 'जिन्दगी. . . एक लम्हा'

पटना (आससे) । वन क्लिक प्रोडक्शन के बैनर तले निर्माता निर्देशक प्रांगल सिंह द्वारा निर्मित वृतचित्र जिन्दगी.....एक लम्हा आज रूकनपुरा बेली रोड स्थित वृद्धाश्रम में रिलीज हुई। फिल्म की कथावस्तु वृद्धाश्रम में रह रहे बुजुर्गो के जीवन का दर्द साझा करंती है इस अवसर पर प्रांगल सिंह ने बताया यह डाक्यूमेन्ट्री भावनात्मक पहलुओं को व्यक्त करती हे उन संवेदनाओं को टटोलता है जो अपने-अपने वृद्धमाता पिता को वृद्धश्रम में छोड़ आते हैं सबके लिए बुजुर्गो का सम्मान करना कर्तव्य है इस अवसर पर डाक्यूमेन्ट्री से जुड़े कलाकारों और तकनीशियनों ने अपना अनुभव साझा किया।

Scanned with CamScanner

यादों में सुशांत. बिहारी कलाकारों व निर्देशकों ने कहा

नेपोटिज्म हर क्षेत्र में फैला हुआ है इससे संघर्ष करने की है जरूरत

बिहारी कलाकार और समीक्षक सुशांत सिंह राजपूत के मुद्दे पर लगातार अपनी बातें रख रहे हैं. प्रभात खबर ने जब इनसे बात की तो उनका कहना था कि हर क्षेत्र में नेपोटिज्म यानी भाई-भतीजावाद है. लेकिन इससे संघर्ष करना है.

सुशांत सिंह राजपूत की मृत्यु से बहुत दुखी हूं. बॉलीवुड का एक होनहार एक्टर चला गया, लेकिन नेपोटिज्म हर जगह है. हमेशा से हम देखते हैं कि डॉक्टर का बेटा ही डॉक्टर बनता है. वकील का बेटा ही वकील अधिक बनता है. हर क्षेत्र में ही यही कहानी है, लेकिन किसी को काम उसकी पहचान उसके मेहनत के बल पर मिलता है. बिहार की बात करें, तो बिहारी पंजाबी गाने को काफी दिलचस्पी से सुनते हैं. हर कोई एक-दूसरे को प्रोमोट करते है. जहां तक डिप्रेशन की बात है हर इंसान किन्हीं कारणों से डिस्ट्रेस्ड रहता है.

- क्रांति प्रकाश झा, एक्टर

नेपोटिज्म हर जगह है, यह कोई क्राइम भी नहीं है. क्राइम है किसी के साथ गलत व्यवहार करना, किसी को सताना, इसका हमें विरोध करना चाहिए. अननेसेसरी बाहरी बोलकर किसी को नीचा न दिखाएं. सुशांत प्रकरण में जो हुआ बहुत दुखद हुआ. लेकिन उन्हें अपनी जान नहीं लेनी चाहिए थी. जैसे हम जब दुनिया में जन्म लेते है तब हम फैसला नहीं करते. उसी तरह हमारी मौत पर भी हमारा हक नहीं है. हमको कोई भी फैसला लेने के पहले अपने परिवार के बारे में सोचना चाहिए. इंसान जितना मेहनत और संघर्ष करता है निखर कर आता है. नकारात्मक सोच नहीं रखनी चाहिए.

-राजेश कुमार, टीवी एक्टर

सुशांत सिंह राजपूत के निधन से सबसे ज्यादा दुख उनके परिवार वालों को हुआ है. उन्होंने अपने जवान बेटे को खोया है. वे कम समय में ही उस ऊंचाई में पहुंचे थे, जहां तक पहुंचना हर नये एक्टर की ख्वाहिश होती है. सुशांत के निधन के बारे में सुन कर यह विश्वास ही नहीं हुआ हमारे साथ काम करने वाले को एक्टर व बेहतरीन कलाकार हमारे अब बीच नहीं रहे. फिल्म इंडस्ट्री की क्या मांग है. बहुत तरह की बातें है. जिन पर ध्यान देना पड़ता है. सुशांत के साथ हमने जो समय बिताये थे. वह सभी याद आ रहे है. गहरा दुख है. हमने सोन चिड़िया में साथ काम किया है.

- मनोज वाजपेयी, अभिनेता

हिंदी सिनेमा वह रहा है, जिसमें किसी छोटे शहर से, किसी पत्रिका की प्रतियोगिता के माध्यम से आकर राजेश खन्ना और धर्मेंद्र जैसे कलाकार ने जगह बनायी थी. हिंदी सिनेमा में नेपोटिज्म की बात खूब होती है, लेकिन यह भूल जाते हैं. सिनेमा का भविष्य दर्शक तय करते हैं. वह सूरज पंचोली और अभिषेक बच्चन को पूरी तरह नकार भी दे सकता और टाइगर श्राफ को सफल भी कर सकता है. सुशांत की घटना में हम नेपोटिज्म को दोष नहीं दे सकते.

- विनोद अनुपम, फिल्म समीक्षक

नेपोटिज्म की जड़ें आज समाज में कुछ उस तरह फैल चुकी है. जैसे कोरोना वायरस पूरे देश में फैला हुआ है. सुशांत की घटना से दुखी हूं. मेरी संवेदना उनके परिवार वालों के साथ है. सुशांत मेरे बड़े भाई नहीं बल्कि बेहद करीबी भी थे. आज के दौर में नेपोटिज्म समाज में हर जगह है. जैसे बिजनेस, राजनीति, फिल्मी-जगत अगर बात फिल्मी-जगत की है तो ये कड़वा सच है की नेपोटिज्म फिल्मी जगत में भी फैला हुआ है.

- प्रांजल, फिल्म मेकर

यह एक ज्वलंत मुद्दा है. सुशांत सिंह एक बेहतर कलाकार थे, जो अपनी मेहनत की बल पर निखर रहे थे. उनकी मौत ने हर किसी को स्तब्ध कर दिया है, लेकिन इसका सबसे बड़ा कारण मुझे खुद बिहार का इन्फ्रास्ट्रक्चर लगता है. क्योंकि हमें अपने बिहार में ही वह पहचान वह जगह नहीं मिल पाती. इस कारण टैलेंट रहते हुए मुंबई जैसे शहरों में शोषित होना पड़ता है और यह सिर्फ कैमरे के सामने वाले ही नहीं कैमरे के पीछे काम कर रहे लोग भी करते हैं.

- संजय झा मस्तान, फिल्म निर्देशक

सुशांत एक बेहतर एक्टर थे. उन्होंने कम समय में ही मुकाम हासिल किये. मुझे नहीं लगता कि सुशांत सिंह के साथ नेपोटिज्म किया गया है. क्योंकि यह अभी क्लियर नहीं हुआ है. कारण कुछ और भी हो सकते है. न ही कोई ऑफिशियल इनवेस्टिगेशन हुआ है. इसलिए कुछ भी कहना मुश्किल है. क्योंकि कोई भी पहचान उसके टैलेंट के बल पर ही होता है. सुशांत ने अपने टैलेंट बल पर ही काम किया है और थोड़ी बहुत नेपोटिज्म हर जगह है.

- अभिनव ठाकुर, फिल्म निर्देशक

Scanned with CamScanner

20.06.2020

prabhatkhabar.com

प्रभात खबर

बिहार जागे... देश आगे

पटना । मुजफ्फरपुर । भागलपुर । गया । रांची । जमशेदपुर । धनबाद । देवघर । कोलकाता से प्रकाशित

पेज 10

नेपोटिज्म की जड़ें आज समाज में कुछ उस तरह फैल चुकी है. जैसे
ना वायरस पूरे देश में फैला हुआ
ुशांत की घटना से दुखी हूं. मेरी
ना उनके परिवार वालों के साथ
ुशांत मेरे बड़े भाई नहीं बल्कि बेहद
बी भी थे. आज के दौर में नेपोटिज्म
ज में हर जगह है. जैसे बिजनेस,
नीति, फिल्मी-जगत अगर बात
मी-जगत की है तो ये कड़ वा सच है
ापोटिज्म फिल्मी जगत में भी फैला
है.

- प्रांजल, फिल्म मेकर

सिटी एक्टिविटी

Scanned with CamScanner

City भास्कर
पटना, शुक्रवार, 10 जुलाई, 2020

मैनेजमेंट फंडा

एन. रघुरामन, मैनेजमेंट गुरु

लॉकडाउन के बाद घरों में एक्वेरियम रखने का बढ़ा ट्रेंड, प्रकृति के साथ रहने का महत्व और नए शब्द सीख रहे बच्चे

एक्वेरियम की रंग-बिरंगी मछलियों से लोग घर को रख रहे पॉजिटिव, बच्चों को मिल रहे नए दोस्त

LIVE WITH NATURE

सिटी रिपोर्टर, पटना

लॉकडाउन के बाद पटना में मछलियों को पालने का ट्रेंड बढ़ गया है। लोग अपने घरों को पॉजिटिव रखने के लिए पेट्स में सबसे आसानी से हैंडल होने वाली मछलियों को घर ला रहे हैं। छोटे से बड़े एक्वेरियम में रंग-बिरंगी मछलियां रख रहे हैं। कुछ लाइट्स के साथ उनको डेकोरेट कर घर के एक कोने को सजा रहे हैं। इससे छोटे बच्चों का मन लग रहा है और वे नए शब्द भी सीख रहे हैं। इन दिनों बाहर की मछलियों का इंपोर्ट तो बंद है लेकिन लोकल मछलियां जैसे गोल्ड फिश, रेड कैप, कॉमन कार्प, शार्क, टिफल बार की खरीदारी लोग कर रहे हैं। महंगी मछलियों में फ्लावर हॉर्न और एरोवाना फिश की खरीदारी लोग कर रहे हैं। इनकी कीमत तीन हजार से 15 हजार तक है।

मछलियों के साथ बात करते हैं बच्चे

डेढ़ साल की परिशा घर में करीब चार महीने से नहीं निकली। कोरोना के खतरे की वजह से अभी वो अपनी मछलियों के साथ ही खेलती है। उनसे बातें करती है। उसका जुड़ाव उनसे हो गया है। पिता प्रांजल बताते हैं कि खिलौने के साथ हमने मछलियों के साथ खेलने की आदत लगाई है ताकि वो अभी से नेचर से जुड़ सके। हमने कुछ मछलियां लॉकडाउन के बाद खरीदीं। इनमें से परिशा को सबसे ज्यादा रेड हैट और एंजल मछली पसंद आती है। अकसर वो खुद से उन्हें खाना देती है।

पटना में 100 से ज्यादा एक्वेरियम की दुकानें

50 लाख का कारोबार होता है एक महीने में

15 हजार तक की मछली खरीदते है लोग

01 हजार से लेकर 10 हजार तक के एक्वेरियम खरीद रहे लोग, छोटे एक्वेरियम की डिमांड ज्यादा

कोलकाता से आती है ज्यादातर मछलियां

पानी पूरा नहीं 50% ही बदलें

कंकड़बाग में एक्वेरियम शॉप के ओनर निशांत कुमार ने बताया कि पानी गंदा हो जाने के बाद ही बदलें। एक्वेरियम के पानी को हमेशा 50 प्रतिशत ही बदलें ताकि मछली पुराने माहौल में रहे और पानी भी साफ हो। पानी नॉर्मल हो। खाना भी एक टाइम ही देना है। अगर ज्यादा खाना आप दे देते हैं तो उसे बचने के बाद निकाल लें।

लॉकडाउन के बाद डिमांड बढ़ी

आशियाना नगर स्थित आशियाना एक्वेरियम के ओनर प्रेम कुमार ने बताया कि लॉकडाउन के बाद नए कस्टमर्स बढ़े हैं। लोग बच्चों की डिमांड पर छोटे एक्वेरियम व मछलियां खरीद रहे हैं। अभी तक 100 से ज्यादा एक्वेरियम की बिक्री हो गई है। वहीं निशांत कुमार ने बताया कि नए कस्टमर 40 प्रतिशत तक बढ़े हैं।

इनकी डिमांड ज्यादा

- ओरेंडा गोल्ड- 350 रुपए पेयर
- एरोवाना सिल्वर- 2500 से शुरू
- रांचो गोल्ड- 150 पेयर
- पैरट फिश- 550 रुपए
- टीटू पैरट- 1500 रुपए
- बबल आई : 90 से 120
- रेड कैप ओरेंडा- 300
- फ्लावर हॉर्न- तीन हजार से 15 हजार तक

- जरूरी नहीं है लोग बड़े एक्वेरियम ही खरीदें। छोटे एक्वेरियम और कुछ मछलियों से भी बच्चों को अच्छा फील होगा। बच्चे छोटी-छोटी चीजों में खुशियां खोज लेते हैं। मछलियों से उन्हें पॉजिटिव ऊर्जा तो मिलेगी ही साथ ही उनमें केयरिंग और प्यार की भावना जागेगी। वो नेचर से कनेक्ट होंगे। डॉ. बिंदा सिंह, मनोचिकित्सक

रचनात्मकता और प्रासंगिकता के द्वंद्व के बीच गुजरता है लेखक

सिटी रिपोर्टर . पटना

एक लेखक क्रिएटिविटी और रेलेवेंस के द्वैत्व और द्वंद्व के बीच गुजरता है। क्रिएटिविटी हमारा इनर फोर्स है और रेलेवेंट होने की हमारी चाहत आउटर फोर्स है। किसी चीज को देखना, समझना, एनलाइज करना, इंटरप्रेट करना और उसका सारांश निकालना यह सब हमारा इनर फोर्स है। ये सब चीजें हमारे अंदर चलती रहती हैं और इस पूरे प्रॉसेस में हम अकेले होते हैं। हालांकि, एक क्रिएटिव इंसान का यह स्वभाव-धर्म भी है। वहीं, जब हम इसे किसी फॉर्म के जरिए एक्सप्रेस या फिर लोगों से कनेक्ट करने की कोशिश करते हैं, तब यहीं से रेलेवेंट होने और न होने का सिलसिला शुरू होता है। ये बातें गुरुवार को संगीत नाटक अकादमी अवॉर्डी व फेमस थिएटर राइटर अभिराम भड़कमकर ने कहीं। मौका था कोकोनट थिएटर के पटना चैप्टर की ओर से आयोजित लाइव सीरीज चाय-वाय रंगमंच 2020 का। वे रचनात्मकता और प्रासंगिकता का द्वंद्वाद विषय पर लाइव थे। उन्होंने कहा कि नाटक एक ऐसा फॉर्म है, जिसमें एक व्यक्ति नाटक लिखता है और बहुत सारे लोग उसे तैयार करने में शामिल होते हैं। साथ ही बहुत सारे ऑडियंस उसे देखते हैं। ऐसे में एक से अनेक होने में रेलेवेंट का बोझ क्रिएटिविटी के साथ धीरे-धीरे आने लगता है।

जेडी वीमेंस कॉलेज की छात्राएं हुईं प्रोमोट 13 से नया सत्र शुरू

सिटी रिपोर्टर . पटना

जेडी वीमेंस कॉलेज में नए सेमेस्टर की पढ़ाई ऑनलाइन शुरू कर दी गई है। यूनिवर्सिटी द्वारा लिए गए निर्णय के बाद छात्राओं को अगले क्लास में प्रोमोट कर दिया गया है। कॉलेज की शिक्षिकाएं भी नए रूटीन बनाने में लग चुकी हैं। कॉलेज की प्राचार्या डॉ. श्यामा राय के अनुसार कॉलेज जब तक नहीं खुलेंगे तब-तक सभी विषयों में ऑनलाइन पढ़ाई जारी रहेगी। इससे पहले छात्राएं पढ़ाई व परीक्षा को लेकर ऊहापोह और असमंजस की स्थिति में थीं। कॉलेज के इस निर्णय से छात्राओं की पढ़ाई अब शुरू हो जाएगी।

गीतों से सामाजिक संदेश दें ताकि समाज में सुधार हो और प्रेम बढ़े

सिटी रिपोर्टर . पटना

ऑनलाइन प्लेटफार्म पर गुरुवार को सावन महोत्सव में गायक और अभिनेता छैला बिहारी ने लोकगीतों की सुरीली महफिल सजाई। मिट्टी की ओर खींचते उनके गीतों ने सबको प्रफुल्लित कर दिया। शिव के भक्तों को उन्होंने गीतों से अनुरोध किया कि देश के सेहत के लिए फिलहाल मंदिरों में न जाएं। घर में पूजा करें और कोरोना से बचें। उन्होंने गायकी के दौरान अनुरोध किया कि आत्मसंयम रखें, घरों में रहें इससे खुद भी बचेंगे और समाज भी सुरक्षित रहेगा। कई कार्यक्रमों का आयोजन ऑनलाइन हो रहा है उसको मिलकर देख सुन सकते हैं। भोला के घर में चोरी भैले हो भाई...... गीत गाया। कांवर भजनों में नाचे कांवरिया शिव के नगरिया, बाबा एक कुछ ऐसा आयना बना दे जो चेहरा नहीं नियत दिखा दे। देर शाम तक गायक ने गीतों के साथ लोगों को अपने साथ जोड़े रखा। उन्होंने लोकगीतों की महत्ता पर चर्चा की। फिल्मों तक पहुंचने की अपनी जर्नी के बारे में भी बताया। उन्होंने यह भी बताया कि गीतों को हम हमेशा ऐसे बनाते हैं कि वो कुछ सामाजिक संदेश दें ताकि समाज में सुधार हो और सकारात्मक बदलाव आए।

GLAMOUR

Scanned with CamScanner

NBT

NAV BHARAT TIMES

शॉर्ट फिल्म बनाने का इरादा

मास कॉम की पढ़ाई के बाद मैंने डायरेक्शन में अपना करियर बनाया। मैंने साल 2014 में महिलाओं के खिलाफ हो रहे अपराधों पर 'रेज योर वॉइज-एक आवाज' नाम से एक शॉर्ट फिल्म बनाई थी। उसका ट्रेलर और म्यूजिक लॉन्च किया था। इस साल उस शॉर्ट फिल्म को एक बड़े लेवल पर रिलीज करने की तैयारी है।

-प्रांजल सिंह, गोमतीनगर

Scanned with CamScanner

हिन्दुस्तान 02
लखनऊ • सोमवार • 16 मार्च 2015

महिलाओं के साथ हिंसा हो तो 'रेज योर वॉयस'

लखनऊ। महिलाओं और लड़कियां कभी स्कूल जाते तो कभी कहीं घूमने जाते वक्त मनचलों को शिकार होती हैं। ऐसी मानसिकता वाले लोगों की नजरों और कृत्यों से तभी बच सकती हैं, जब वो आवाज उठाएंगी। महिला और समाज को जागरूक करती फिल्म 'रेज योर वॉयस' एक आवाज लघु फिल्म भी देती है। फिल्म का प्रदर्शन रविवार को जयशंकर प्रसाद सभागार में किया गया।

प्रांजल सिंह के निर्देशन में बनी इस लघु फिल्म की शूटिंग लखनऊ में हुई हैं। फिल्म में तमाम चीजों को दिखाया गया है। जिसे एक महिला रोज सड़क, पार्क, स्कूल, ऑफिस में झेलती है। साथ ही फिल्म में इससे बचने के लिए महिलाओं से आह्वान किया गया है कि वो अपनी आवाज को दबाएं नहीं आवाज को उठाएं।

फिल्म में सरिता झा, मनीष ठाकुर, भावना पाण्डेय, जितेश सिंह, अजहर खान, शाहबाज खान, अभिषेक सिंह, सुरभि सिंह, रंजना चौहान, मोहम्मद नदीम सिद्दीकी व अन्य कलाकारों ने प्रभावी अभिनय किया है। फिल्म के निर्माता और निर्देशक प्रांजल ने बताया कि इसे ज्यादा से ज्यादा लोग देखे इसलिए फिल्म को सोशल साइट्स पर अपलोड कर दिया गया है। स्कूलों में फिल्म को दिखाए जाने की भी योजना है।

Scanned with CamScanner

Life at old age home — a social mirror

Reena Sopam
htpatna@hindustantimes.com

PATNA: All does not appear to be well for the senior citizens of the state capital. They are fast losing social support and family base needed at this late stage of their lives.

Around half a dozen old age homes have sprung up in the city in last few years. And even the number of inmates at these shelters has gone up markedly.

City based amateur filmmaker Pranjal Singh has made a documentary 'Zindagi Ek Lamha' mirroring the life of senior citizens at these old age homes. The personal background of these inmates, their expectations from life, their children and other family members have also been depicted in the documentary.

Shot entirely at old age shelters in the city, including Sahara - the old age home at Bailey Road and Aashraya at Patliputra, the 60-minute documentary will be screened at one of the old age homes at Ved Nagar here in a couple of days.

"There were several inmates at each old age home and we have captured the life and experiences of 5-6 of them. It was an eye opener. Many of the inmates were retired senior railway officials, bankers, businessmen and political leaders," Pranjal said, sharing his experiences during shooting of the short film.

A still from the documentary 'Zindagi Ek Lamha'.

CITY BASED AMATEUR FILMMAKER PRANJAL SINGH HAS MADE A DOCUMENTARY 'ZINDAGI EK LAMHA' MIRRORING THE LIFE OF SENIOR CITIZENS AT THESE OLD AGE HOMES. THE MOVIE AIMS TO SENSITISE PEOPLE TOWARDS DISINTEGRATION IN FAMILY AND LACK OF CARE AND CONCERN FOR OLD PARENTS

The movie aims to sensitise people towards disintegration in family and lack of care and concern for old parents, he said.

At Sahara, a former railway official, Shyam Mohan (name changed), who took voluntary retirement while working as DRM in Guwahati, Assam, has been here since 2014.

"All his eight children are now settled abroad. At one point of time, he wanted to end his life and had even given a petition for euthanasia. He wants to get back his property now owned by his children and donate it to some orphanage or old age home," Pranjal said.

Another inmate, Bal Gangadhar (name changed), was a former ward councillor in Mithapur locality for over 30 years. All his life he took care of his nephews and other kin, but was so tortured after retirement that he finally left home and was brought to the shelter by a friend.

Yet another had been a banker but his children no longer want him in the family while Geeta (name changed) is a retired teacher from Kolkata who was brought here by her son and left near the Mahavir Mandir, he added.

Pranjal said the movie was an effort to pay tribute to senior citizens of the city. It was made with the help of some local boys and girls, including Sadhna Shivani, Manoj Chauhan, Surya Chauhan, Jyoti Tiwari, Naziya Naz, Vishal and Aditya.

केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Scanned with CamScanner

THE TELEGRAPH FRIDAY 1 APRIL 2016

The Telegraph

Documentary

Patna: *Zindagi: Ek Lamha*, a documentary on the plight of old people in the city's old age homes was screened at Rukunpur on Thursday.

Scanned with CamScanner

The press conference for the trailer launch of our movie raise your Voice ...Ek Awaaz was held on 4th of December at Rai Umanath Bali Auditorium from 01:00 pm to 02:30pm.

The Trailer of our movie launched by a prestigious music director of hollywood Mr. Robert Obaid Rouhi who came all the way from Los Angles to be a part of Raise your Voice. After launching the trailer he was very emotional and his speech to press he said that It was not at all the problem of Indian women but it is faced by women all around. He appreciated the work and efforts the team of Raise your voice ek awaaz did...! He congratulated the producer director Pranjal Singh on his achievements.

The guest of honour to our event was Bollywood music director who has worked with the Khan's of Bollywood. Guest of honour Mr. Sankalp Asthana was impressed by the audio part of the movie...!!

शोषण के खिलाफ महिलाएं खुद उठाएं आवाज

लखनऊ। महिलाओं की हिंसा और उनसे होने वाली छेड़छाड़ को रोकने के लिए खुद महिलाओं को ही आगे आना होगा। जब तक वे खुद के खिलाफ होने वाले शोषण पर आवाज नहीं उठाएंगी, तब तक शोषण नहीं रुकेगा। महिलाओं को इसी तरह सशक्त होना दिखाती 15 मिनट की डॉक्यूमेंट्री 'रेज योर वॉयस एक आवाज' का ट्रेलर बृहस्पतिवार को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में लांच हुआ। युवा निर्देशक प्रोड्यूसर प्रांजल सिंह की इस पांचवी फिल्म की लांच के मुख्य अतिथि हॉलीवुड फिल्मों टीवी शो के संगीतकार राबर्ट ओबेद रुई रहे।

A PRANJAL SINGH FILM

RAISE YOUR VOICE... EK AWAAZ.

महिला अपराध के
खिलाफ
उठे आवाज।

Scanned with CamScanner

Delhi's odd-even rule affects Lucknow road travellers to the capital too

As the odd-even number traffic rule comes into effect in Delhi, Lucknowites contemplate taking flights instead of road trips to the capital, or finding other ways to tackle the problem

The Delhi government's decision to allow four-wheelers with odd and even numbers to ply on alternate days on city roads has left many Delhites confused. But the rule, which will be implemented from today for a trial period of 15 days, is also making Lucknowites fret. Those who travel to Delhi by road frequently are wondering how to plan their trips to the capital now, if the experiment succeeds. As it is, there are no exceptions being made for cars from other states in Delhi now.

"As my car number is even, should I buy another car with an odd digit just to go to Delhi?"asks Lucknowite Pranjal Singh, who works as a freelance photographer, and travels to Delhi by car frequently. "I don't think it's a practical solution to curb pollution," adds Singh, who hasn't yet been able to devise a way to work around the number rule. Other Lucknowites, though, have thought of solutions to the problem.

CONTINUED ON PAGE 7

Scanned with CamScanner

राष्ट्रीय सहारा

लखनऊ। ● शनिवार 19 मार्च ● 2016

वृद्धा आश्रम का दर्द बयां करती है 'जिन्दगी एक लम्हा'

लखनऊ। वृद्धाश्रमों में रहकर बुजुर्गों का जीवन कितना दुखमय है। कुछ ऐसी ही कहानी डाक्यूमेंट्री फिल्म 'जिन्दगी एक लम्हा' में पेश की गयी। वन क्लिक प्रोडक्शन के तहत निर्मित इस फिल्म को प्रोडक्शन के गोमतीनगर स्थित कार्यालय पर किया गया। फिल्म के निर्माता व निर्देशक प्रांजल सिंह ने बताया कि उससे पहले महिला शोषण, उत्पीड़न जैसे मुद्दों पर फिल्म बना चुके हैं लेकिन इस फिल्म में खासतौर पर वृद्धाश्रम के रहने वाले बुजुर्गों की जिदंगी को दिखाया गया है।

कॉपस ऑफ लखनऊ

16 मार्च, 2016 राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

बुजुर्गों के दर्द को दर्शाती है 'जिन्दगी...एक लम्हा'

लखनऊ, कार्यालय संवाददाता

निर्माता निर्देशक प्राजंल सिंह द्वारा निर्मित वृत्त चित्र (डाक्यूमेण्ट्री फिल्म) जिन्दगी..एक लम्हा वन क्लिक प्रोडक्शन में रिलीज हुई। यह उनकी ग्यारहवीं फिल्म हैं। प्राजंल सिंह के मुताबिक यूं तो हर पल

लखनऊ में हुई लांच प्रांजल सिंह द्वारा निर्देशित फिल्म 'जिन्दगी...एक लम्हा'

बढ़ती है जिन्दगी रंग बदलती नये रूप में ढलती है जिंदगी लम्हे में सिमटी लम्हों से बंधती लम्हों में कटती लम्हों को जोड़कर बनती है जिन्दगी।

इस फिल्म का निर्माण लखनऊ एवं बिहार की राजधानी पटना में हुआ है। इस फिल्म के माध्यम से निर्देशक प्रांजल सिंह ने समाज का असली और कठोर चेहरा दिखाने की कोशिश की है इस फिल्म के माध्यम से वह उन वरिष्ठ नागरिकों पर सब का ध्यान आर्किषत करना

चाहते हैं और समाज को यह दिखाना चाहता है कि वृद्धाश्रम में रह रहे बुजुर्गों का जीवन कितने दर्द से भरा है और वो हर दिन कितनी परेशानियों का सामना करते हैं।

बुजुर्ग अपने बच्चों से बहुत उम्मीद रखते हैं पर उनके बच्चे उनको वृद्धाश्रम छोड़ आते हैं जहां वे लोग अपनी जिन्दगी के चंद बाकी पल इस आशा में बिता देते हैं कि शायद कल उनके बच्चे उनको लेने वापस आयें। श्री सिंह ने सबसे अपनी कुछ अनमोल यादें बांटी जो वह वृद्धाश्रम से समेट के लाये थे। उन्होंने बताया एक बुजुर्ग के इंटरव्यू के दौरान उन्होंने प्रांजल और उनकी टीम को बताया कि पश्चिमी सभ्यता की वजह से अब परिवार छोटे होते जा रहे हैं और लोग अपने माता पिता का साथ नहीं देते हैं जिस वजह से हर दिन नये वृद्धाश्रम बन रहें हैं। निर्माता प्रांजल सिंह ने बताया कि सूटिंग के दौरान उनको और उनकी टीम को एक बहुत ही भावनात्मक दौर से गुजरना पड़ा उन्होंने यह भी बताया कि इस फिल्म के माध्यम से और एक इंसान होने की हैसियत से 'मैं आप सब से यह पूछना चाहता हूं क्या जरूरी है आप सब के लिए मां का प्यार और ममता या समाज का दिखावटी चेहरा'। उन्होंने कहा हम सब को जरूरत है आगे बढने की और अपने आस - पास मौजूद बुजुर्गों को प्यार और इज्जत बांटने की। राधा मोहन सिंह को न्यायालय में इच्छामृत्यु तक की गुहार न्यायालय में लगानी पड़ी क्योंकि उनको उनके बच्चों ने छोड़ दिया। आज यह वृद्धा आश्रम में रहने को मजबूर हैं, उन्होने हमारी टीम को बताया की जब एक वृक्ष बड़ा हो जाता है तो वह नयी पीढी को साया देता है पर आज कल लोगो को बुजुर्गों के तजुर्बे और ज्ञान की जरूरत नहीं।

Scanned with CamScanner

शुक्रवार , 11 मार्च 2016

हिन्दुस्तान

एक युवा ने कई बुजुर्गों पर बनाई फिल्म

इन दिनों लखनऊ के कई युवा फिल्म मेकिंग के फील्ड में अपने जौहर दिखा रहे हैं। इसी क्रम में नया नाम है प्रांजल का। प्रांजल ने अब तक कई शॉर्ट फिल्में बनाई हैं। अब उन्होंने तन्हा बुजुर्गों पर फिल्म जिंदगी एक लम्हा बनाई है।

शहर का सितारा

लखनऊ। हिन्दुस्तान संवाद

जिंदगी हर पल बढ़ती है और नए नए रंग में ढलती है। कई छोटे छोटे खट्टे मीठे लमहे मिलकर जिंदगी की सूरत गढ़ते हैं

.... यह कहना है निर्देशक प्रांजल सिंह का। प्रांजल शहर के युवा फिल्म मेकर हैं। एमिटी यूनीवर्सिटी से पत्रकारिता का कोर्स करने के बाद उन्होंने इस दिशा में कदम रखा है। वह अब तक 10 शॉर्ट फिल्में बना चुके हैं। हाल फिल्हाल उन्होंने एक और फिल्म बनाई है जिसका नाम है एक लम्हा।

बुजुर्ग लोगों की कहानी कहती है यह फिल्म

बकौल प्रांजल यह फिल्म बुजुर्ग लोगों की जिंदगी पर आधारित है। फिल्म में दिखाया गया है कि किस तरह लोग अपने बूढ़े मां बाप को आश्रम में छोड़ देते हैं और पलट कर खबर भी नहीं लेते। जिस उम्र में मां बाप को बच्चों का सहारा चाहिए होता है, उनकी जरूरत होती है उस उम्र में उनको तनहा जिंदगी गुजारनी पड़ती है।

प्रांजल सिंह कहते हैं कि उन्होंने फिल्म में समाज का असली और कठोर चेहरा दिखाने की कोशिश की है। प्रांजल बताते हैं कि फिल्म एक सामाजिक संदेश भी देती है। उनको पूरी उम्मीद है कि यह फिल्म दर्शकों को पसंद आएगी।

14 मार्च को रिलीज होगी फिल्म जिंदगी एक लम्हा..

शहर के युवा प्रांजल (बाएं) ने बनाई फिल्म जिंदगी एक लमहा.. फिल्म का पोस्टर (दाएं)

लखनऊ में बनी है फिल्म

प्रांजल बताते हैं कि इस फिल्म की शूटिंग लखनऊ और पटना में हुई है। फिल्म बनाने से पहले शहर के कई बुजुर्गों से बात भी की। एक बुजुर्ग ने उनसे कहा कि अब परिवार छोटे होते जा रहे हैं इस वजह से लोग अपने माता-पिता का साथ नहीं देते हैं और बढ़ती उम्र में बुजुर्गों को अकेले रहना पड़ता है। यह फिल्म 14 मार्च को रिलीज होगी। इससे पहले भी प्रांजल कई अलग अलग विषयों पर कई शॉर्ट फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं।

Scanned with CamScanner

HAPPY NEW YEAR.

सिटी हलचल

साल पूरा हो गया लेकिन इनकी कई ख्वाहिशें साल भर कोशिश करने के बावजूद पूरी नहीं हो सकीं। अब नया साल इनके लिए नई उम्मीद लेकर आया है। इन्हें यकीन है कि इस साल इनकी सारी विशेज जरूर पूरी हो जाएंगी। एनबीटी रीडर्स ने हमारे माध्यम से अपने जज्बातों को अल्फाज में पिरोकर अपनों तक पहुंचाने की कोशिश की है।

31st December, 2014
Nav Bharat Times की
Lucknow Times.

दिल जो न कह सका...

शायद उस तक ये बात पहुंच जाए

गोमती नगर में रहने वाले प्रांजल सिंह ने अपनी एक्स गर्लफ्रेंड को बिना बताए उसके लिए म्यूजिक एलबम ही बना डाला। प्रांजल के मुताबिक उनका हाल ही में ब्रेकअप हुआ है, वह चाहते हैं कि उनकी एक्स गर्लफ्रेंड वह एलबम सुनें क्योंकि इसके जरिए वह अपनी दिल की बात उस तक पहुंचाना चाहते हैं। वह जानना चाहते हैं कि आखिर उनकी गर्लफ्रेंड ने उनसे ब्रेकअप क्यों किया। यही कारण जानने के लिए उन्होंने पूरा म्यूजिक एलबम ही बना डाला। उन्हें उम्मीद है कि एलबम के गाने सुनने के बाद वह कॉल करके उन्हें ब्रेक-अप की वजह जरूर बताएगी।

Scanned with CamScanner

बॉयफ्रेंड दोस्ती रखना चाहता है, क्या करूं?

मेरा बॉयफ्रेंड दूसरे रिलीजन का है। फ्यूचर न देखते हुए हमने ब्रेकअप कर लिया लेकिन अब वह कहता है कि वह मुझसे दोस्ती रखना चाहता है। मेरी समझ नहीं आ रहा, क्या करूं?

वाह! जवाब

अगर आपके घर में इंटरकास्ट रिलेशन नहीं एक्सेप्ट होता इसलिए आपने ब्रेकअप किया है तो दोबारा दोस्ती करना समझदारी नहीं होगी। घरवाले इसके लिए तैयार हों, तभी दोस्ती की शुरुआत करें।
-वर्षा, राजाजीपुरम

इंटरकास्ट रिलेशन शुरू करने से पहले अच्छी तरह सोच लें। इसमें कई तरह के इश्यूज होते हैं, जिन्हें स्मार्टली हैंडल करना चाहिए। ब्रेकअप के बाद दोबारा दोस्ती से हालात और भी बिगड़ सकते हैं।
-सूर्या चौहान, गोमती नगर

मेरे हिसाब से ब्रेकअप के बाद भी अगर आप दोस्ती रखना चाहते हैं, तो कोई दिक्कत नहीं है। यह आपकी अंडरस्टैंडिंग पर डिपेंड करता है। एक बार बात करके दोस्ती रख सकते हैं।
-प्रांजल सिंह,गोमती नगर

मेरे हिसाब से अगर आपने हिम्मत करके इंटरकास्ट रिलेशन की शुरुआत की है तो उसे कुछ वक्त देना चाहिए। ब्रेकअप के बजाय फैमिली से बात करके रास्ता निकालने की कोशिश करें।
-देव सिंह, इंदिरा नगर

यह है एक्सपर्ट की राय

इंटरकास्ट रिलेशन में ब्रेकअप के बाद दोस्ती रखना दोनों के मेच्योरिटी लेवल पर निर्भर करता है। अगर वे ब्रेकअप के बाद भी दोस्ती रखना चाहते हैं और इससे सहमत हैं तो कोई बुराई नहीं है।
- डॉ आदर्श त्रिपाठी, एक्सपर्ट

आज का सवाल : लंबे रिलेशनशिप के बाद मेरा ब्रेकअप हो गया है। कई कोशिशों के बाद भी मैं आगे नहीं बढ़ पा रहा हूं। क्या करूं? - अतुल वर्मा, रायबरेली रोड

अगर आपका भी कोई सवाल है जिसपर लोगों की राय चाहते हैं तो अपने सवाल lucknowtimesnbt@gmail.com पर भेजिए। सब्जेक्ट में लिखें wah jawab अपना नंबर और पता लिखना न भूलें।

Scanned with CamScanner

नवभारत टाइम्स
NBT
Lucknow

नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली/लखनऊ, बुधवार, 10 फरवरी 2016 I ADVERTORIAL ENTERTAINMENT PROMOTIONAL FEATURE

कोई हंसा तो कोई इमोशनल हुआ

टेडी देने के लिए कितने जतन कर डाले उसने

वैसे वैलंटाइंस वीक के किसी दिन का मुझे क्रेज नहीं पर मेरे फ्रेंड्स को है। उन्हीं में से एक बेस्ट फ्रेंड ने मुझे टेडी गिफ्ट करने की प्लानिंग की। बिना कुछ सोचे समझे वह मार्केट से एक पिंक कलर का टेडी बियर खरीद लाया। घर आकर अपने रूम में उसे रख दिया। रात को जब उसकी मम्मी कमरे में आईं तो उन्होंने उस टैडी के बारे में पूछा। इस पर उसने तपाक से बोला कि वह छोटी (बहन) के लिए है। अगले दिन यानी टेडी डे पर उसे वो टेडी अपनी बहन को देना पड़ा। इसके बाद वो मार्केट गया और दूसरा टेडी खरीदा। साथ में एक डॉग का सॉफ्ट टॉय लेकर मेर पास आया। उसने मुझे कॉल की और मेरे घर के पास एक पार्क में मिलने के लिए बुलाया। मैं रेडी होकर वहां गई तो देखा जनाब टेडी बियर लेकर खड़े हैं। उसे देखकर मुझे हंसी आ गई। इसके बाद जब उसने पूरी कहानी सुनाई तो मैं ठहाके मारकर हंसने लगी। वाकई पहले टेडी का ये बहुत फनी एक्सपीरियंस था। *-रंजनी सिंह, इंदिरा नगर*

इमोशनल हो गई गर्लफ्रेंड

गर्ल्स को टेडी बियर पसंद हैं ये मुझे पता था पर मेरी गर्लफ्रेंड को टेडी बियर से कुछ खास लगाव नहीं था। हम नए रिलेशनशिप में आए थे और रोज हमारी मुलाकात होती थी। रात में फोन पर देर तक बातें करने की हमारी आदत थी। कुछ दिन बाद मेरी पार्टनर को पढ़ाई के सिलसिले में छह महीने के लिए दिल्ली जाना पड़ा। नए-नए प्यार में इस तरह की जुदाई मुझे बहुत अजीब लगी। खैर, करियर की बात थी तो मैंने अपने उदास दिल को पीछे रखते हुए उसे खुशी-खुशी विदा किया। उन छह महीनों में हमारी बातचीत भी कम हो गई थी। एक दिन मैं दोस्तों के साथ मार्केट गया तो टॉय शॉप में क्यूट सी डॉल दिखी। मैंने तुरंत उसे गर्लफ्रेंड के लिए खरीदा और घर ले आया। छह महीने के बाद जब वो वापस आई तो इत्तेफाक से उस दिन टेडी डे ही था। मेरे पास उसे गिफ्ट करने के लिए टेडी तो नहीं था लेकिन मैंने वो डॉल उसे गिफ्ट कर दी और साथ में एक लेटर भी दिया। उसे पढ़कर वो थोड़ी इमोशनल हो गई और मुझसे कहा, 'मैं सोचती थी कि छह महीने तक तुमसे दूर हूं तो तुम मुझे भूल जाओगे लेकिन वापस आकर तुम्हारा इस कदर प्यार देखकर दिल को बहुत खुशी मिली। थैंक्स। *-राजेंद्र पांडेय, गोमती नगर*

वैलंटाइंस ...

इश्क ...

'हफ्ता मोहब्बत वाला' शुरू... चुका है। ऐसे में भागती जि... से कुछ पल चुराकर उस... नाम कर दीजिए, जिसने आपकी जिंदगी को रफ्तार दी है। अगर अपने जज्बात को लफ्ज देने के लिए आ... सही मौके की तलाश में है... एनबीटी फेमिना क्लब दे ... है आपको एक मौका। इस वैलंटाइंस डे पर हम सिले... कपल्स को सिटी के बेहत... होटल में डिनर कराएंगे, ... आप अपने पार्टनर से बेध... दिल की बात कह सकते है...

जिंदगी में उम्मीद जैसा लखनऊ का 'लव आजकल'

Vartul.Awasthi@timesgroup.com

ये 'लव आजकल' है। इसमें जुदा होने की मायूसी है और उबरने की उम्मीद भी। ये एक बार जीते हैं, एक बार मरते हैं लेकिन प्यार इनके लिए फर्स्ट, सेकंड या थर्ड नहीं होता। पहले प्यार से चोट खाने के बाद दूसरा प्यार भी इनके लिए उतना ही खूबसूरत होता है, जितना पहले वाला था। ये प्यार को नहीं बल्कि इनसान की फितरत को दोषी मानते हैं। इन्होंने पहली मोहब्बत खोने के बाद ही पाक मोहब्बत पाई है। यह बढ़ने पर यकीन करते हैं। हफ्ता मोहब्बत वाले के तीसरे दिन हम आपको ऐसे ही कुछ लोगों की जिंदगी की तस्वीर बयां कर रहे हैं, जिन्होंने पहले प्यार में हारने के बावजूद अपना असली वैलंटाइन पा लिया।

खोया नहीं बल्कि बहुत कुछ पा लिया है

प्यार जिंदगी में एक बार होता है। ऐसा गोमती नगर की सूर्या चौहान को पहले लगता था लेकिन बाद में उनका यह भ्रम टूट गया। वह बताती हैं कि कॉलेज टाइम में म्यूचुअल फ्रेंड के जरिए एक फ्रेंड से मेरी दोस्ती हुई थी। वो मुझमें ज्यादा इंट्रेस्ट लेने लगा था। हमारी बात हुई और हम रिलेशनशिप में आ गए लेकिन हम दोनों की सोच बिल्कुल अलग थी। तीन साल तक रिलेशनशिप चली लेकिन मिस अंडरस्टैंडिंग की वजह से हम अलग हो गए। फिर मुझे लगा कि अब मैं दोबारा प्यार नहीं कर पाऊंगी। फिर मैंने इन सबसे ध्यान हटाकर जॉब पर लगाया। मैं प्रांजल के फिल्म प्रोडक्शन से जुड़ी। असल में कॉलेज डेज में मैं और प्रांजल सेम डिपार्टमेंट में थे। जो मेरी फ्रेंड्स प्रांजल के साथ थीं, वो उनके बारे में इतना उल्टा सीधा बताती थीं कि मैं उनसे हेट करने लगी। हालांकि, उनके साथ काम करने के दौरान मुझे पता चला कि वह बहुत केयरिंग हैं। दरअसल, उन दिनों प्रांजल का भी उनकी एक्स गर्लफ्रेंड से ब्रेकअप हुआ था। जब दो जख्मी दिल मिले तो हमें फिर से प्यार होने लगा। हमारी अंडरस्टैंडिंग परफेक्ट मैच हो गई। वो मेरे हाव-भाव देखकर समझ जाते हैं कि मैं खुश हूं या परेशान। मुझे अब महसूस होता है कि मैंने कुछ भी खोया नहीं बल्कि बहुत कुछ पा लिया है।

ये वाला इश्क भी है उतना ही खूबसूरत

इनके लिए प्यार उतना ही खूबसूरत तब भी था, जब पहली बार हुआ और अब भी है, जब दूसरी बार हुआ है। पेशे से राइटर गोमती नगर के शोभित सिन्हा बताते हैं कि कॉलेज टाइम में मेरी एक गर्लफ्रेंड बनी थी। मैं उससे बेइंतहा प्यार करता था। दो साल तक हमारा रिलेशनशिप चला। मुझे उसकी सारी बातें मंजूर थीं बस

टेडी... करें...

शेफाली श्रीवास्त...

टेडी बियर ... हैं, गिफ्ट ... उतने ही ... पर हर कोई अपने ... करना चाहता है। ह... बियर के बारे में, जि... हैं। इन्हें आप मार्केट ... ऑनलाइन भी ऑर्ड... वेबसाइट्स में सेम ...

Scanned with CamScanner

प्रभात खबर
लाइफ @ पटना
जलिम्स जिंदगी का

दूल्हा-दुल्हन फोटोशूट करा भेज रहे हार्ट टचिंग इनविटेशन

एक ऐसा वीडियो जो जिंदगी भर याद रहे

हमारी जिंदगी की सबसे यादगार दिन 9 फरवरी है, जिस दिन हम शादी के पवित्र बंधन मे बंधने वाले है. यह कहना है बेली रोड के प्रांजल का, जिनकी शादी डॉ निशा से तय हुई है. उन्होंने बताया कि हम अपने बीजी शेड्यूल से शादी की तैयारी के लिए टाइम निकाल रहे है. ऐसे मे बुकिंग के बाद सबसे पहले हमने प्री वेडिंग फोटो शूट के साथ-साथ हमने सेव द डेट का एक प्यारा का वीडियो डिजाइन करवाया है, जिसे वन क्लिक प्रोडक्शन द्वारा शूट किया गया है. इसकी शूटिंग हमने गुरु ग्राम स्टूडियो मुंबई मे 23 दिसंबर को करायी थी. शादी नजदीक आते ही हमने अपनी वीडियो को शेयर करना शुरू कर दिया है. अब हमारे शादी की कार्ड से ज्यादा लोग अपनी वीडियो को पसंद कर रहे है. यह सब एक यादगार पल है, जो पूरी जिंदगी हमे याद रहेगी. लोग हमारे शादी की डेट कई दिनो पहले ही सेव कर चुके है.

Scanned with CamScanner

RAISE YOUR VOICE
RAISE YOUR VOICE!
... EK AWAAZ

4th December, 2014

Venue:
Rai Umanath Bali
Auditorium,
Lucknow

नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली/लखनऊ, शुक्रवार, 5 दिसंबर 2014

Pics : Satyendra Mehrotra

महिला अपराध के खिलाफ 'एक आवाज'

शालू अवस्थी

देश में महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध को देखते अब हर तरफ से आवाज उठाने की जरूरत हो गई है। 16 दिसम्बर के उस खौफनाक मंजर के बाद लोगों ने आवाज बुलंद की। इसमें बड़ी संख्या में यूथ ने आकर प्रोटेस्ट किया। एमिटी यूनिवर्सिटी के मासकॉम डिपार्टमेंट से पासआउट कुछ स्टूडेंट्स ने महिलाओं के खिलाफ बढ़ते क्राइम पर एक शॉर्ट फिल्म बनाई, जिसका ट्रेलर गुरुवार को बली प्रेक्षागृह में लॉन्च हुआ। फिल्म का मकसद समाज में जागरूकता लाना और लड़कियों को उनसे जुड़े कानून के बारे में जानकरी देना है। ट्रेलर के लॉन्च के दौरान हॉलिवुड म्यूजिक कंपोजर रॉबर्ट ओबेदरोही भी मौजूद थे।

सर्वे के बाद की शूटिंग

शॉर्ट फिल्म 'रेज योर वॉयस-एक आवाज' के डायरेक्टर प्रांजल सिंह ने बताया कि शॉर्ट फिल्म बनाने से पहले हमने एक सर्वे किया और लड़कियों में कानूनी नॉलेज देखी। इससे हमें पता चला कि लड़कियों को उनसे जुड़े कानून के बारे में कितनी जानकारी है। फिल्म में 15 मिनट में सभी चीजें कवर करने की कोशिश की गई है। फिल्म की पूरी शूटिंग लखनऊ में हुई है। फिल्म में लिरिक्स और आवाज लखनऊ के आशीष की है।

वीडियो को ज्यादा लोगों तक पहुंचाने की कोशिश

फिल्म के स्क्रिप्ट राइटर सूर्या सक्सेना ने बताया कि इसे यूट्यूब पर रिलीज किया जाएगा। इसके बाद वे लखनऊ के स्कूल कॉलेज कवर करेंगे और वहां इस फिल्म की स्क्रीनिंग करेंगे। हॉलिवुड म्यूजिक कंपोजर रॉबर्ट ओबेदरोही ने कहा कि उन्हें खुशी है कि 16 दिसंबर की वारदात के बाद भारत ने सख्त कदम उठाए। विमिन मोलेस्टेशन की बात पर उन्होंने कहा कि जिस दिन अरब देशों की तरह बाकी देशों में सख्त कानून बनाए जाएंगे, उस दिन से इन अपराधों पर लगाम लग जाएगी।

Courtesy:
NavBharat-times

Raise your Voice
Everybody
Raise your
Voice.....
Its time to
raise your
Voice..
Everybody
RAISE YOUR
VOICE

PRANJAL SINGH PRESENTS

Chief guest
Robert Obaid
Rouhi

Time:
01:00 pm –
02:30pm

A Pranjal Singh film
Raise Your Voice
... EK AWAAZ

Scanned with CamScanner

मूल्य 20/-

फरवरी 2016

नई पीढ़ी

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

पंजीयन संख्या : DELHIN/2015/64415

अमित शाह की असली परीक्षा

Scanned with CamScanner

सपनों से हकीकत तक का सफर

प्रांजल सिंह

आंखों में सपने लिए,
घर से हम चल तो दिए.
जाने ये राहें अब ले
जाएंगी कहां...

एक गाने की ये पंक्ति प्रांजल सिंह पर बिल्कुल सटीक बैठती हैं। मूल रूप से बिहार के रहने वाले प्रांजल ने अपनी स्कूली पढ़ाई पटना से पूरी की. इसके बाद उन्होंने यूपी की राजधानी लखनऊ का रूख किया। यहां एमिटी यूनीवर्सिटी से पत्रकारिता करने के बाद उन्होंने समाज की दिशा व दशा बदलने का बीड़ा उठाया। फिलहाल डाक्यूमेंटरी फिल्मों के माध्यम से वे समाज के दबे कुचले व असहाय लोगों की वास्तविक स्थिति को बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत करने का मुसलसल प्रयास कर रहे हैं। पेश हैं उनसे नयी पीढ़ी संवाददाता द्वारा हुई बातचीत के महत्वपूर्ण अंश–

– राम कृष्ण शुक्ला

◆ समाजसेवा के लिए डाक्यूमेंटरी ही क्यों ?

फिल्म मेकिंग मुझे अच्छी लगती है और ये मेरा फील्ड ऑफ इंटरेस्ट भी है। इसलिए मैंने सोचा कि देश की तमाम परिस्थितिओं को देश के सामने लाने का इससे अच्छा कोई और तरीका नहीं हो सकता है विशेषकर मेरे लिए।

◆ आपकी लेटेस्ट डॉक्यूमेंटरी ?

उम्मीदें (अक्टूबर, 2015) मेरी लेटेस्ट डॉक्यूमेंट्री है। ये अपने अधिकारों से दूर उन लोगों की दास्तान से जुड़ी फिल्म है जो वास्तविक गरीबी का सामना करते हैं. इनकी मूलभूत आवश्यकतायें भी पूरी नहीं हो पाती, पर उम्मीदें अभी कायम है इसी को लेकर ये डॉक्यूमेंट्री है।

उम्मीदें देखने के लिए
www.pranjalsinghworld.com

◆ देश में आधी आबादी की दशा सुधारने को लेकर क्या कुछ प्रयास अपने अब तक किया है ?

मैं महिलाओं की स्थिति पर विशेष तौर पर गौर करता हूं। वे आज भी डरी व सहमी रहती हैं। अपने फैसले लेने के लिए पुरूषों पर उनकी निर्भरता कायम है। आप देखें तो महिलाओं की दशा सुधारने के लिए तमाम योजनायें चल रहीं हैं, पर ह•कीकत यह है कि अधिकतर योजनायें कागजी हैं। इनका वास्तविकता से कोई लेना–देना नहीं है। महिलाओं को जागरूक करने के लिए मैंने मार्च में रेज यौर व्वाइस एक आवाज रिलीज की थी. मेरी अगली डॉक्यूमेट्री भी इसी पर आधारित है।

◆ आपने एक प्रोडक्शन हाउस खोला है. अपनी टीम के बारे में बताइये ?

जी हां। हमने एक प्रोडक्शन हाउस खोला है और जहां तक मेरी टीम का सवाल है तो मेरी टीम में 7 लोग हैं जो एक दूसरे को सपोर्ट करते हैं।

◆ आप फोटोग्राफी भी करते हैं ?

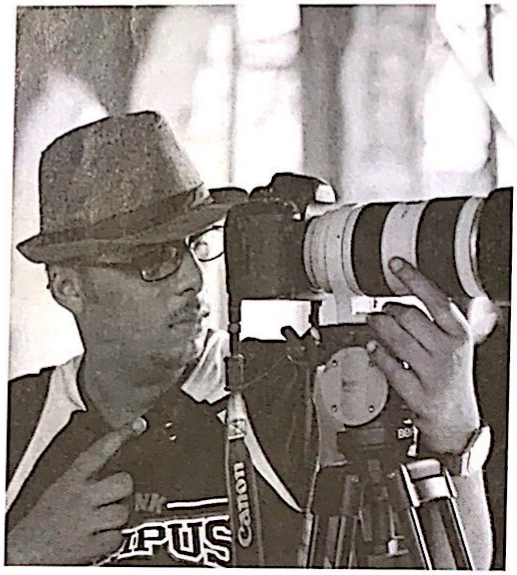

जी हां, मैं कई तरह की पेशेवर चित्रकारी करता हूं।

◆ आपका मिशन क्या है ?

बचपन से मेरा फिल्मों में इंटरेस्ट था। मैं समझता हूं एक ऐसी फिल्म बनाना मेरा सपना है जो मुझे संतुष्ट करे।

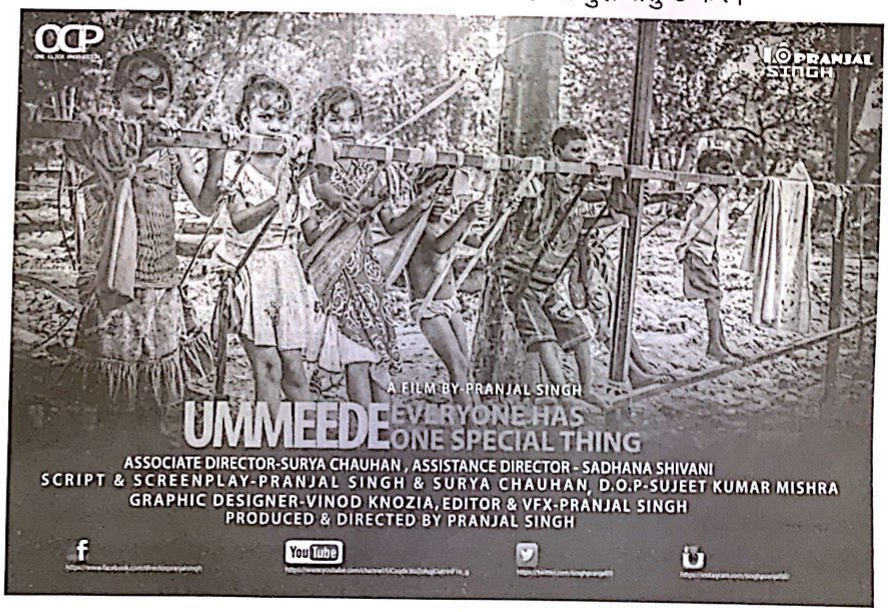

Scanned with CamScanner